भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 8 | अंक 24 | उदयपुर शुक्रवार 15 दिसंबर 2023 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

राजस्थान में विधानसभा चुनाव

साधारण को उच्च पदासीन करने पर चौंके राजस्थानवासी

- डॉ. तुक्तक भानावत -

राजस्थान में हाल ही में हुए विधानसभा चुनाव में एक तो अप्रत्याशित जीत ने सबको चौंकाया और दूसरा जो मंत्री बनाये गये वे भी अकल्पनीय रहे। दूसरों को तो क्या, स्वयं बनने वाले को भी पता नहीं चला कि वे जो नितान्त साधारण कार्यकर्ता हैं, एकदम यकायक अन्तिम पंक्ति से अग्रिम पंक्ति पर आसीन किये जायेंगे। यह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी पार्टी भाजपा के चालचलन और चरित्र से सिद्ध कर दिया जबकि अन्य पार्टियों के चलैया अपने ही अपने जन की सुध लेते रह जमीनी स्तर पर काम कर रहे कार्यकर्ताओं को नजर अन्दाज करते रहे। राजस्थान के अलावा मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में हुए चुनावों में भी ऐसे ही कीचड़ में कमल खिला दिखाया गया।

राजनीति यह नहीं होती कि आप वोट के खातिर ही जनता से मुखातिब हों। वोट के खातिर ही चुनावी बरसात में मेढ़क की तरह टर्र-टर्र कर जनता को रिझायें। वोट के खातिर ही पांच वर्ष में एकबार जन-सेवक के रूप में दर्शन दें। वोट के खातिर ही गिड़गिड़ाएं, अनापशनाप थोथी घोषणाएं करें। लोकलुभावन वादे करें और जीतने के बाद (या हारने के बाद भी;) फिर पांच साल के लिए सत्ता के मद में मदहोश हो जनता से किनारा कर जायें।

राजस्थान में एक साल एक दल कांग्रेस तो दूसरे साल भाजपा का शासन करने का रिवाज-सा बन गया था। इस बार भी हुआ तो यही पर किसी को दृढ़ विश्वास नहीं था। पसीना दोनों दलों को छूट रहा था। भाजपा भीतर से अवश्य आश्वस्त थी कि वह बाजी मारेगी। कांग्रेस भी ऊपर से अपनी आंखें चौड़ी कर दिखा रही थीं पर भीतर से टूटन महसूस करती हुई भी अपने तेवर तीखा किये रही। समझ तो जनता गई पर वह चुपचाप रही। अधिक मुखर नहीं रही। मौन स्वीकृति लक्षणम् दिखाती रही।

कांग्रेस भले ही सबसे पुरानी, सबसे अहम और सबसे अधिक सत्तारूढ़ पार्टी रही हो पर दिन सबके ही फिरते हैं सो सौ दिन सुनार के लद गये और अब एक दिन करते लुहार की समझदारी ने पासा ही पलट दिया।

यों इस बार कोई चुनावी लहर भी नहीं महसूस की गई। हां, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को अपने दल के विजीत होने का 'अण्डर करंट' जरूर दिखाई देता रहा जो धीरे-धीरे पता नहीं कैसे कब ओझल हो गया।

वासुदेव देवनानी
स्पीकर

भाजपा विजयी हुई लेकिन वे लोग जो इसके विजयरथ पर बैठ ताजपोशी पाने की ललक लिये तीव्रता दिखा रहे थे, बड़े मायूस हुए। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सबको ऐसा चौंकाया कि सबके कयास, एक्जिट पॉल तक के नतीजे और भविष्यवक्ताओं के कथन भी सांचे मोती सिद्ध नहीं हुए।

यहां राज रथ पर बैठने वाले एक नहीं, कतार में एक-दो नहीं, चार-पांच चल रहे थे। राज एक तो फिर राजनाथ अनेक कैसे हो सकते हैं? वैसे मोदी ने पहले ही राजा राम तै कर लिया था पर इतना गुपचुप रहा कि कोई हवा उसकी भनक भी नहीं दे सकी और कोई जल्दी नहीं की। वे देखते रहे कि इस गादी के लिए कितने लोग, कितने उतावले होकर प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष में सत्तासुख की प्राप्ति के लिए अपना दमखम दिखा रहे हैं।

इस राज-रज की प्राप्ति के लिये सबसे अधिक वसुन्धरा राजे सिंधिया ने अपना दमखम, दलबल और तीखे तेवर दिखाये। इससे भी जनता भी जान गई कि जब वे पार्टी के अनुशासन में बंधी हुई हैं तो उन्हें कुछ भी कहने, दिखाने, करने का जोश नहीं दिखाना था। प्रत्येक की कार्यक्षमता, पार्टी के प्रति प्रतिबद्धता और कठोर कर्मनिष्ठता पार्टी के अगुआ जानते हैं फिर वसुन्धरा राजे तो भीगीभिगाई अनुभवसिद्ध परिपक्व और खानदानी नेतृत्वसिद्ध नेता हैं।

ऐसे में वसुन्धरा राजे के लिए लगाम बनकर पर्यवेक्षक के रूप में केन्द्रीय रक्षामंत्री राज नाथ बनकर आये और न केवल राजे को अशान्त किया बल्कि बड़े डिप्लोमेटिक अन्दाज में ऊपर से आई पानड़ी पकड़ाई जिसे पढ़ते ही राजे के राज पर बड़ी वजनी गाज गिरी। यही नहीं, राजे से ही राजनाथ ने अगले मुख्यमंत्री के लिए भजनलाल शर्मा के नाम का प्रस्ताव रखा सबको चौंका दिया। यह चौंक ऐसी थी जिसकी भनक किसी को, स्वयं भाजपा के वरिष्ठों और मझले पिछले कार्यकर्ताओं तक को नहीं लगी पर सबको लगा कि देश में राई के कणों की तरह बिखरी छोटी-बड़ी 600 से अधिक पार्टियों में मात्र एक और केवल एक और वह भी भाजपा ऐसी पार्टी है जो साधारण-से-साधारण अति साधारण कार्यकर्ता को जो अन्तिम पायदान पर खड़ा है, उसे लाकर राज्य की सर्वोच्च सत्ता, मुख्यमंत्री पद पर आसीन कर सकती है।

यों भजनलाल भी मोदी की तरह ही जमीनी हकीकत के लाल रहे हैं। मोदी चाय बेचते तो भजनलाल उस चाय का दूध बेचने का धंधा करते हुए धरती पुत्र से धरालाल बनकर निखरे। कोई 43 वर्ष पूर्व भजनलाल के जिले भरतपुर से 1980 में जगन्नाथ पहाड़िया मुख्यमंत्री बने थे। उसके बाद भजनलाल शर्मा इस बार इस पद पर आसीन हुए हैं।

वह राजनीति खोखली राजनीति होती है जिसमें केवल अपना स्वार्थ, अपना हित और सबकुछ अपना ही अपना होता है। उसमें राज से जुड़ी सारी शक्ति का संचयन सत्ताधीशों की बाहों को ही पुष्ट बनाती है। जनता के कल्याणार्थ कोई नीति नहीं रहती। वह जनता को भयभीत तो कर सकती है, कुचल भी सकती है पर उसका दिल नहीं जीत सकती। ऐसी स्थिति में वह घड़ी भी आती है जिसमें जनता का एक मत उसका सर्वस्व छीन उसे जमींदोज करती पाई जाती है।

असली लोकतंत्र की यही पहचान है। जन को भजने वाला भजनलाल राजस्थान के रज को भजता हुआ इसके प्रजास्थान की पहचान का परचम देगा।

मुख्यमंत्री के साथ दो उप मुख्यमंत्री बनाये गये हैं। इनमें से एक दीयाकुमारी समृद्ध-सम्पन्न जयपुर राजघराने से ताल्लुक रखती हैं। आजादी के बाद इस परिवार ने जनसेवक के रूप में अपना मूल्यवान योग दिया। दीयाकुमारी में भी जनसेवा का भरपूर जज्बा है। पार्टी इनके कार्यों से भलीभांति प्रभावित रही हैं। दूसरे प्रेमचन्द बैरवा दूदू के विधायक हैं। इन्होंने पहलीबार 2013 में विधायक पद से चुनाव जीता। फिर 2018 में हार गये। ये दलित वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

इसके अलावा विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी को बनाया गया जो 5वीं बार विधायक बने हैं और अजमेर से हैं। तीन बार मंत्री रह चुके हैं और संघ के कर्मठ कार्यकर्ता हैं। उदयपुर विद्याभवन रूरल इंस्टीट्यूट के प्राचार्य पद पर रहे देवनानी सिंधी समाज से हैं।

पशु-रक्षार्थ मंत्रित बेडियू

-डॉ. दीपक आचार्य-

सदियों से पहाड़ों और जंगलों में प्रकृति के बीच रहने वाले लोगों का पूरा जीवन प्रकृति के रंग-रस में इतना रमा है कि उनकी जीवनशैली में हर पल प्रकृति का ही संगीत सुनाई देता है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में जनजाति समुदायों की तमाम परम्पराएं प्रकृति के साथ इतनी घुली-मिली हैं कि कोई भी सामाजिक या परिवेशीय अनुष्ठान अथवा उत्सव प्रकृति से तालमेल बगैर पूरा नहीं होता।

इन जनजाति समुदायों की अपनी अलग-अलग अनूठी परम्पराएं हैं। राजस्थान के आदिवासी बहुल वागड़ अंचल में अधिकतर लोगों की आजीविका कृषि और पशुपालन पर आधारित है। पशु ही यहां के लोगों का धन और हैसियत का प्रतीक है। पशु चिकित्सा सेवाओं में व्यापक सुधार व विस्तार लेने पर भी अपने पशुओं को वर्ष भर निरोगी रखने की दृष्टि से आज भी वनांचलों में 'बेडियू' प्रथा विद्यमान है।

सदियों पुरानी यह परम्परा पशु-धन के प्रति आस्था और शाश्वत प्रेम का सन्देश देती है। आमतौर पर बरसात के मौसम में यहां के लोग अनन्त चतुर्दशी से पहले इस परम्परागत रस्म का निर्वाह करते हैं। आदिवासी क्षेत्रों में 'बेडियू' का अनुष्ठान भाद्रपद माह में सम्पन्न किया जाता है। गांव के हर घर में सूचित कर रविवार को तमाम लोग माताजी या अन्य देवी-देवता के मन्दिर, सार्वजनिक स्थल या गांव के बाहर एकत्रित होते हैं और उसके बाद शुरू होता है पशु रोग मुक्ति का यह अनोखा पारम्परिक अनुष्ठान।

रविवार को यह रस्म नहीं हो पाने की स्थिति में मंगलवार को इसे सम्पन्न किया जाता है। मन्दिर का सेवक या गांव का भोपा मटके में शुद्ध पानी मंगवाता है। मान्यता है कि इस भोपे के शरीर में देवी का भार (भाव) आता है। भोपा आंचलिक बोली में विभिन्न मंत्र उच्चारते हुए नीम की पत्तियां डालता जाता है। इनके साथ ही सिन्दूर, दूब, नारियल की चटख, कुम्कुम, इत्र, अष्टगंध भी मिलाये जाते हैं। यह सब करते वक्त तमाम ग्रामीण वनदेवी मां और अन्य देवी-देवताओं से ग्राम के पशुओं की रक्षा की प्रार्थना करते हैं।

इस अनुष्ठान के बाद ग्राम में प्रवेश वाली मुख्य सड़क पर मंत्रों से अभिमंत्रित खजूर के पत्तों से बनी रस्सी बांध दी जाती है। इस पर नीम की टहनियां लटकाई जाती हैं। ग्रामवासी अपने पशुओं को लेकर नियत स्थल पर जमा होते हैं। एक व्यक्ति मंत्रोच्चार करता हुआ अभिमंत्रित जल, जिसे स्थानीय भाषा में 'करवणी' कहा जाता है, नीम की टहनी से पशुओं पर छिड़कता रहता है। पशुओं को रस्सी के नीचे से होकर आगे गुजारा जाता है। स्थल पर नारियल और अन्य हवन सामग्री एवं समिधाओं की आहूतियां लगातार होती रहती हैं। उच्च नाद के साथ ढोल का लगातार वादन होता है। इस समय गांव का एक भी पशु ऐसा नहीं होता है जो रस्सी के नीचे से होकर न गुजारा जाता हो।

गांव के तमाम पशुओं को अभिमंत्रित सुरक्षा रस्सी के नीचे से गुजारने के बाद यह विश्वास कर लिया जाता है कि अब गांव का पशु-धन रोगों के प्रकोप से बचा रहेगा। जो पशु इस रस्सी के नीचे से होकर गांव में प्रवेश कर लेता है वह दैवीय कृपा से साल भर निरोग बना रहता है। पशुओं के गुजर जाने के बाद घड़े में पानी मिलाकर 'करवणी' (दैवीय जल) की मात्रा बढ़ा दी जाती है।

- शेष पृष्ठ सात पर

अब आप शब्द रंजन समाचार पत्र
इस लिंक पर भी पढ़ सकते हैं-
https://thetimesofudaipur.com/shabd-ranjan/

पोथीखाना

'वैचारिकी' का विचार मंथन

'वैचारिकी' का हर अंक विचारकों के लिए गहन मंथन लेकर आता है। इसमें प्रकाशित लेख बड़े शोधपूर्ण तो होते ही हैं, शोधार्थियों के लिए भी बहुत सारी जानकारी ऐसी होती है जो शोध के कई द्वार खोलती है।

प्रस्तुत जुलाई-अगस्त 2023 के अंक के कुछ आलेखों का जिक्र करना चाहूंगा। डॉ. आनन्द शर्मा ने बादशाह अकबर का अजेय सिपहसालार : राजा मानसिंह शीर्षक आलेख में 'राजा मानसिंह की बुआ हीराकंवर के अकबर से हुए विवाह के कारण मुगल बादशाह से रिश्तेदारी स्वाभाविक रूप से बन गई थी' लिखा किन्तु उन्होंने मानसिंह के अनूठे योगदान का जिक्र नहीं किया।

राजा मानसिंह ने एक भी राजपूत बालकी को अकबर के पास नहीं जाने दी। राजपूत बालकी की बजाय या तो पासवान की बाई या फिर दासी की लड़की को ही भेजी। इतिहासकारों ने इस रहस्य को भी उद्घाटित नहीं किया कि मानसिंह की बहिन जोधाबाई का विवाह अकबर से नहीं हुआ। हां, दिखावटी रूप में तो हुआ। अकबर बड़े शाही ठाठ से बरात लेकर आया।

सात दिन ठहरी बरात का शाही स्वागत-सत्कार किया गया। दहेज में अनापशनाप धन-दौलत, हीरे-जवाहरात और लाव लश्कर भी दिये गये। यहां तक कि एक सौ दास और सत्तावन दासियां दी गई परन्तु न तो जोधाबाई अकबर को परणाई और न विदाई के समय अकबर के पास ही भेजी गई।

यह विवाह हुआ पानबाई से जो जोधाबाई की हमउम्र थी। दिखने में एक जैसी। यह दीवान वीरमल की पुत्री थी। इसकी माता का नाम दीवालीबाई था। राजा मानसिंह अपना खून अकबर को नहीं सौंपना चाहता था। इसके लिए दीवान दम्पत्ति से गुप्त मंत्रणा कर ली गई थी। दोनों की रजामंदी से ही यह कार्य सम्पन्न हुआ। विवाह के समय पानबाई-जोधाबाई दोनों तरफ चलती रही। सारा काम बड़े व्यवस्थित ढंग से हुआ। सब तरफ जोधाबाई-ही-जोधाबाई दिखाई गई। मण्डप तक भी जोधाबाई ले जाई गई परन्तु ऐन वक्त शादी के समय पानबाई हाजिर कर दी गई। विवाह काजी मुल्ला द्वारा हिन्दू रीति से कराया गया मगर कुरान साथ रखी गई। यह दिन वि.सं. 1564, फाल्गुन शुक्ला अष्टमी, मंगलवार संध्या का था।

पानबाई की डोली विदा करते ही रातोंरात मानसिंह ने अपने सामन्त हिम्मतसिंह और उसकी पत्नी मूलीबाई को जोधाबाई के धर्म के माता-पिता बनाकर मेड़ता के राव दूदा के पास भेज दिया। राव दूदा ने उन्हें ठिकानापति बना कुड़की भेज दिया जहां जोधाबाई का नाम जगतकुंवर कर दिया। कुड़की पहुंचने पर राव दूदा ने अपने पुत्र रतनसिंह का विवाह जगतकुंवर से कर दिया। यह रतनसिंह का पांचवां विवाह था। पूर्व की चारों पत्नियों से कोई संतान नहीं हुई। एक वर्ष बाद जगतकुंवर ने एक बालिका को जन्म दिया जिसका नाम मीरां रखा गया। यह वही मीरां थी जिसका विवाह चित्तौड़ के राजकुंवर भोजराज से हुआ। भोजराज शिव भक्त थे तो मीरां कृष्ण भक्त।

डॉ. शर्माजी ने प्रसिद्ध हल्दीघाटी युद्ध में महाराणा प्रताप का परास्त होना लिखा जबकि इतिहासकार इसे नहीं मानकर प्रताप की विजय दिखाते हैं और वहां भी मानसिंह प्रताप की किसी प्रकार सहायता ही करते हैं। इसीलिए अकबर उन पर नाराजगी जताता है।

महेश पुरोहित का डूंगरपुर का मूर्ति-कला उद्योग गहन अध्ययन एवं अनुसंधान लिए है। द्वारिका के द्वारिकाधीश की प्रतिमा यहीं के देवजी सोमपुरा ने बनाई। देवजी की और भी कई मूर्तियां बनाई हुई हैं। देवजी के लड़के श्यामजी ने शामलाजी में कृष्ण प्रतिमा बनाई। श्यामजी के पुत्र नानक्या ने श्रीनाथद्वारा के श्रीनाथजी की मूर्ति बनाई। यह नानजी नाम से अधिक जाना गया जो अविवाहित ही रहा।

डॉ. अनुपमा तिवारी का आलेख आन्ध्रप्रदेश की सांस्कृतिक संरचना में संस्कृति पक्ष को बहुत कम छूकर ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को ही अधिक दर्शाया गया है। लोकगीत के सन्दर्भ में उन्होंने दो प्रकार के लोकगीतों का उल्लेख करते प्रथम वर्ग में अनपढ़-अशिक्षित जनता, श्रमिकों द्वारा गाये जाने वाले तथा दूसरे वर्ग में रचनाकारों द्वारा रचित लोकगीत बताया। उनकी दोनों ही बातें विद्वानों द्वारा अस्वीकार्य सिद्ध हो चुकी हैं। उनका यह कथन बहुत पहले के विद्वानों का रहा जो कइयों द्वारा कालान्तर में अमान्य सिद्ध हो चुका है।

अगर ऐसा है तो देश के प्रत्येक विश्वविद्यालय में लोकसाहित्य अर्थात् मौखिक साहित्य, कण्ठासीन अलिखित साहित्य पर शोध का विषय नहीं बनता। हमारी लिखित जितना भी प्राचीन-अर्वाचीन ज्ञान-सम्पदा है वह उसी लोक की है जो डिग्रीधारी नहीं है पर परम्पराशील परिपक्वता लिये है। सारे त्यौहार-उत्सव, व्रतानुष्ठान, रीतिरिवाज जिनके बगैर हमारा काम नहीं चलता, मौखिक वाणी से ही तो सम्बद्ध है। सारा ज्ञान लिखित भी तो नहीं हो सकता।

डॉ. अनुपमाजी ने रचनाकारों द्वारा रचित रचनाओं को भी लोकगीत कहकर गीत और लोकगीत का अन्तर ही समाप्त कर दिया। सच तो यह है कि लोकगीत किसी व्यक्ति विशेष की रचना नहीं होते। वे समूह द्वारा रचित, समूह द्वारा संरक्षित, समूह की ही धरोहर होते हैं। यदि ऐसा होता तो कवियों द्वारा लिखे लोकप्रिय गीत और सिनेमा के गीत भी लोकगीत ही कहे जाते। पिछले वर्षों में इन पर बहुत लिखा जा चुका है।

- म. भा.

नयी चेतना का खण्डकाव्य

'जनमत का जयघोष' एक प्रतीकात्मक मिथकीय खण्डकाव्य है। इसके रचनाकार शिव 'मृदुल' लम्बे समय से साहित्य साधना कर रहे हैं तथा इन्होंने अनेक रूपों में रचनाकर्म किया है किन्तु मूलत: वे कवि हैं तथा उनका कविकर्म काफी रचनात्मक रहा है। उनका नया खण्डकाव्य 'जनमत का जयघोष' जिस रूप में रचा गया है, आजकल गेय प्रबंध काव्य कम लिखे जा रहे हैं। फिर भी इस काव्य में उन्होंने हरिगीतिका छंद में हिरण्यकश्यप तथा उसके पुत्र प्रहलाद की कथा को प्रतीकात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। हिरण्यकश्यप अनाचार तथा अत्याचार का प्रतीक है तो उनका पुत्र प्रहलाद शोषितजन की पीड़ा के विरुद्ध जनजाग्रति का अग्रदूत है, जिसमें जनशक्ति को जग की नियामक शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया है।

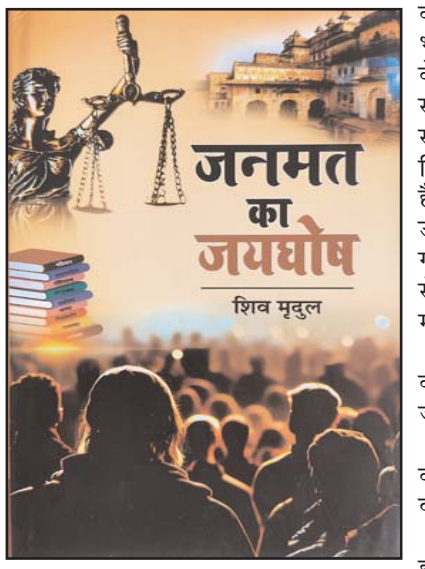

शिव 'मृदुल' ने इस काव्य में हिरण्यकश्यप के माध्यम से उन राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रवृत्तियों का उत्खनन किया है, जो मानव विरोधी हैं तथा उनके अस्तित्व को ही लील जाना चाहती हैं। चाहे वह भारत में लगे आपातकाल का अंधकार हो, जिसमें नागरिकों के मूल अधिकार ही छीन लिये गए थे अथवा जापान पर अमेरिका की बमबारी का विनाशकारी खेल! इनके पीछे सत्ता के प्रति लोभ तथा अपने वर्चस्व को स्थापित करने की तीव्र लालसा! यह व्यक्ति की कमजोरी तो है ही, हर राष्ट्र की भी कमजोरी है। इस कमजोरी के पीछे हिरण्यकश्यप सक्रिय है। वह एक पात्र न होकर एक अमानवीय प्रतीक बन जाता है, जो अपने वर्चस्व को स्थापित करने हेतु मानव-जीवन तथा मानव-जीवन के शाश्वत जीवनमूल्यों को रौंदता चला जाता है। वस्तुत: आज आवश्यकता मानवीय मूल्यों के संरक्षण की है।

वह नरपशु है, उसे अपने वर्चस्व के लिये कुछ भी कदम उठाने में संकोच नहीं है। वह विश्व में सतत बढ़ रही आतंकवादी गतिविधियों का केन्द्र बन जाता है। उसके लिये न कोई अपना है, न कोई पराया! वह स्वयं ही अपने लिये अपरिहार्य है। इसीलिये अपनी बहन होलिका से अपेक्षा करता है कि वह उसके पुत्र प्रहलाद को अग्नि में प्रवेश के समय उसके साथ लेकर बैठे, जिससे वह जल जाए और उसके नीति और सिद्धांतों के विपरीत चलने वाला वह पुत्र उसके मार्ग से हट जाए। स्वयं होलिका के लिये यह कार्य अत्यंत दुष्कर है। वह एक ममतामयी नारी है। उसके आततायी भाई की वास्तविकता का उसे भलीभाँति ज्ञान है। वह प्रत्यक्ष रूप में अपने नृशंस एवं निरंकुश भाई का विरोध नहीं कर पाती है। वह बुआ-भतीजे और भाई-बहन के रिश्ते के लौकिक सम्बंधों के बीच संतुलन बनाये रखने के लिये उद्वेलित हो उठती है और उसका अंतर्द्वन्द्व उसे उसके भाई के गलत आदेश को मानने से रोकता है। उसकी मन:स्थिति दृष्टव्य है-

बिल्कुल न चाहूँ में कभी प्रहलाद यों जलकर मरे।
बिल्कुल न चाहूँ मैं कभी, भाई बहन का वध करे।।

इस काव्य में होलिका एक नारी सुलभ गुणों से ओतप्रोत पारिवारिक सम्बन्धों की मर्यादा में बंधी एक उदात्त चरित्र वाली महिला है, जो अपने लौकिक जीवन में शाश्वत मानवमूल्यों की स्थापना के लिये संकल्पित है।

जनभावना उसके पक्ष में बनी रहे, इस दृष्टि से वह मन ही मन प्रहलाद को सुरक्षित रखने का संकल्प लेती है। उसका यही संघर्ष अमानवीय शक्तियों को पराजित करने का कारण बनता है। प्रहलाद की पीड़ा ही हिरण्यकश्यप के विनाश का कारण बनती है। यही आम जनता का प्रतिरोधी स्वर है, जो आततायी के विरुद्ध जयघोष के रूप में गूंजता है और हिरण्यकश्यप रूपी जनविरोधी शक्ति का संहार करता है। इस प्रकार यह काव्य मिथक को आधुनिक सन्दर्भों में अहिंसक क्रांति के रूप में लोकतंत्र की सार्थकता को व्यक्त करता है-

जनमत अहिंसक क्रांति से,
नृप को बदलता है यहाँ!
स्थायी निरंकुश हो सका,
उल्लेख है ऐसा कहाँ?

मिथक की सार्थकता उसके आधुनिकतम रूप में ही होती है, यही इस काव्य की सार्थकता भी है। सुभद्रा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, डी-48, गली नं. 3, दयालपुर, करावलनगर रोड, दिल्ली- 110094 से प्रकाशित 104 पृष्ठीय यह काव्य 275 रूपये की कीमत लिये है।

-डॉ. हेतु भारद्वाज

सपनों, कल्पनाओं और विजन की जीत

- जितेन्द्र कोठारी -

चुनावों में हारने वाले जनता के फैसले को अप्रत्याशित बता रहे हैं जो कई मायनों में लगता भी है पर जो चुनाव परिणाम आए हैं उनमें एक बात साफ झलकती है कि लोगों में अब इतिहास से ज्यादा भविष्य को महत्त्व देने की सोच डवलप हो चुकी है। भविष्य की नींव विजन पर रखी जाती है और जो अपने विजन को जनता के दिलों-दिमाग में उतारने की काबिलियत रखता हो जनता उसी पर भरोसा करने लगती है जो इन चुनावों में मिली भारी जीत का मुख्य आधार कहा जा सकता है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अक्सर अपनी बातों में आने वाले कल की बात करते देखे जाते हैं। विजन बताते हैं। किस समय तक, क्या काम हो जाएगा यह कहते हैं। लक्ष्यों की बात करते हैं। आंकड़े पेश करते हैं।

सपने देखते हैं तो दिखाते भी है यानी वे देश को और लोगों को कहां पहुंचाना चाहते हैं इस पर फोकस करते हुए अपनी बात रखते हैं। यह सब करने के साथ ही वे बेईमानी, भ्रष्टाचार, लूट व अपराध को खत्म करने की बात पूरी ताकत से कहते हुए ऐसा करने वालों को न छोड़ने का भरोसा देते हैं। उनकी प्रसनल्टी का डवलपमेंट विभिन्न माध्यमों के सहयोग से ऐसा हो गया है जिससे लोग उनके द्वारा की जा रही बातों को उनकी पर्सनल गारंटी के रूप में देखने लगे हैं। यह कम बात नहीं है कि हर राज्य के चुनावों में भाजपा के लोकल नेताओं को पीछे रखकर सिर्फ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को ही फोकस में रखा गया और यह फार्मूला कमाल करने वाला साबित हुआ।

राजनीति ऐसी साइंस बनती जा रही है जहां नए इनोवेशन व एक्सप्रीमेंट की स्पीड तेजी से बढ़ते हुए पुराने तय फार्मूलों को बेकार साबित करने लगी है। देश के लोग क्या सोचते हैं व किन बातों पर वोट देने के लिए प्रेरित किए जा सकते हैं यह भी इन चुनावों में बदला-बदला सा नजर आया। राजस्थान में गहलोत सरकार की स्कीमें, योजनाएं व उनकी विजन बनाने की कोशिश इतनी भी कमजोर नहीं थी पर आखिरी के एक-दो महीनों में जैसे ही प्रधानमंत्री मैदान में उतरे उन्होंने इन सभी के प्रभावों को जनता के मन से हटाकर अपनी जगह बनाने में सफलता हासिल कर ली। यह भी समझ आ गया कि लोग देश को, देश के रंग को देशभक्ति को व देश की पहचान को सर्वोपरि मानते हैं फिर चाहे इनके आगे कितने ही अच्छे काम व चुनौतियां क्यों न हों इसलिए इन चुनावों में राज्यों से ज्यादा देश के लिए महत्त्व रखने वाली बातें काम करने वाली साबित हुई।

भाजपा पर लोगों का भरोसा लगातार पिछले 9-10 सालों से मजबूत होता जा रहा है जिसके कई कारण हैं पर सबसे बड़ा कारण है उसकी लीडरशिप का बेदाग होना जिसके कारण नीचे के लेवल तक अधिकतर नेता उसी अनुसार तैयार होते जा रहे हैं। अगर लीडरशिप में कहीं कुछ गड़बड़ होती तो इतने लम्बे समय में विपक्षी पार्टियों द्वारा ढेरों प्रयास के बीच सामने जरूर आ जाती पर ऐसा नहीं हो पाया जो राजनीति में 'ईमानदारी' के फैक्टर का महत्त्व समझाती है।

लोगों को बेदाग, ईमानदार व रिजल्ट देने वाली लीडरशिप चाहिए यह पता तो सभी को है पर इसे करके दिखाने में भाजपा सफल रही है। हम भाजपा की लीडरशिप में ऐसे समय में एंट्री ले चुके हैं जहां नियमों व कायदों को फॉलो करना ही होगा व पारदर्शिता से समझौता करना भारी पड़ता रहेगा और ऐसा करने में कुछ गलत भी नहीं है पर जिन्होंने पिछले कई वर्षों में ऐसा नहीं किया उनमें से कइयों को भारी कीमत चुकानी पड़ रही है जिसके अनेक उदाहरण सामने आते रहते हैं और जिनमें कारोबारी जगत के बड़े-बड़े दिग्गज भी शामिल हैं। यह भी बड़ा कारण है जिसने कई क्षेत्रों में लोगों को भाजपा की विचारधारा व नीतियों से सहमत न होने पर भी कुछ हद तक खुद को बचाए रखने के लिए उसके साथ बने रहने को मजबूर कर दिया है।

आने वाले समय का चक्र कैसा चलेगा व देश की राजनीति में विपक्ष कितना मजबूत रह पाएगा यह समझना अब ज्यादा मुश्किल नहीं रहा इसलिए समय के साथ चलने की तैयारी पहले से ज्यादा बड़े लेवल पर करनी होगी क्योंकि 2024 में भाजपा की जीत लगभग पक्की ही मानी जा रही है जिसके बाद सपने, विजन कितने ही दिखाए जाए पर पारदर्शिता और ईमानदारी को हर सेक्टर का अभिन्न अंग बनाने की स्पीड और तेज होगी ऐसा माना जा सकता है।

स्मृतियों के शिखर (176) : डॉ. महेन्द्र भानावत

बचपन के खिलौने या खिलौनों का बचपन (2)

घूघरा :

हाथ में पकड़कर बजाये जाने वाले खिलौनों में 'घूघरा' बड़ा लोकप्रिय रहा है। ये घूघरे विभिन्न

आकारों के बनाये जाते हैं। बड़े से बड़ा घूघरा एक बेंत (9 इंच) तक होता है। इनके हाथ में पकड़ने वाला हिस्सा डंडी वाला होता है। इसके ऊपरी सिरे पर 'गोल घूमटी' निकाली जाती है। इस घूमटी के ऊपर निकला हुआ 'छोगा' होता है। घूमटी में पत्थर के कंकड़ भर दिये जाते हैं। डंडी हिलाने पर घूघरा बजता रहता है। यह खराद पर उतारा जाकर तीन-चार रंगों में सजाया जाता है। घूमटी पर फूल, पत्ती, बेलें निकाली जाती हैं।

चुग्गा चिड़िया एक ऐसा खिलौना होता है जिसमें धागे का कमाल होता है। इसमें एक लकड़ी का अष्टकोण युक्त पटिया होता है जिसके नीचे हत्था लगा दिया जाता है। पटिये के आठों कानों पर एक-एक चिड़िया लगा दी जाती है। इन चिड़ियों के गर्दन का हिस्सा अलग से लोहे की पिन द्वारा संयुक्त किया होता है। पिन के पास वाले पार्श्व भाग से छेद के माध्यम से पतला धागा, प्लेट पर छेद कर प्लेट के नीचे दे दिया जाता है। ऐसे आठों चिड़िया के आठ धागे नीचे निकले होते हैं। इन्हें संयुक्त कर एक गांठ लगा दी जाती है और उस गांठ से करीब 6 इंच की लड़ी लटकती हुई रखकर उसमें लकड़ी का एक गट्टा छेदकर लगा दिया जाता है। प्लेट का हत्था हाथ में पकड़कर हिलाने से नीचे वाला गट्टा हिलेगा, जिससे चिड़ियों की चोंच प्लेट पर दाना चुगने जैसी क्रिया करती रहेगी।

विभिन्न प्रकार की पुतलियों के साथ-साथ कठपुतली भी बच्चों के लिए खिलौना ही है। धागे से चलने वाली पुतलियों के खेल में बच्चे इतने लवलीन हो जाते हैं कि उन्हें यह भी पता नहीं चलता कि जो खेल वे देख रहे हैं वे कोई जीवित पुतलियां कर रही हैं या खिलौने मात्र हैं। कठपुतली के खेल में सांप-सपेरा, नर्तकी, घोड़ा नृत्य, धोबी का गधा, पीलपीलीसाब, बहुरूपिये, बीकानेर की मालिन, डुगडुगी वालों की करामात और द्वारपालों के करतब देखकर बच्चे लोटपोट हो जाते हैं।

बच्चों में किसी समय ललुआ पुतली का बड़ा प्रचार था। इस पुतली में लकड़ी के जुदे-जुदे हाथ-पांव और धड़ बने होते, जिन्हें बच्चे अपने हाथ की अंगुलियों में फिट कर देते। जब पांचों अंगुलियों में पुतली के दोनों हाथ, दोनों पांव और बीच की अंगुली में धड़ लगा दिया जाता तो हथेली में एक रूमाल बिछा दिया जाता। बच्चे जब अपनी अँगुलियों को हिलाते तो ऐसा लगता जैसे कोई बच्चा सोया हुआ अपने हाथ-पाँव हिला रहा है। बच्चों के लिए दस्ताना पुतलियाँ बहुत कारगर सिद्ध हुई। इस पुतली के संचालन में हाथ की मात्र तीन अंगुलियों काम करती हैं। अँगूठे के पास वाली अंगुली में पुतली का धड़ फिट कर दिया जाता है और अंगूठा तथा बीच की अंगुली में दोनों हाथ पहना दिये जाते हैं। दस्ताना पुतली, पेपरमेशी की बनी हुई होती है और बड़ा प्रभाव उत्पन्न करती है। इसके लिए मंच भी अलग तरह का होता है तो चलाने वाला पूरा सिर तक ढके रहता है। उसके ऊपर चालक अपने हाथ, ऊँचा किये खेल बताता है। कठपुतली से भी अधिक यह पुतली प्रभावकारी सिद्ध हुई और चलाने, सीखने तथा बनाने में भी बड़ी आसान रहती है।

लकड़ी के बने लट्टू का एक नाम भमरा है। भमरी लट्टू से थोड़ी छोटी होती है। भमरे-भमरी के सिर के ऊपर उठा हुआ थोड़ा सा गोलाई वाला हिस्सा उसका माथा यानी सिर कहलाता है, जिसके सर्वप्रथम लपेट देने के बाद ही डोर भमरे-भमरी के चारों ओर लपेटी जाती है। डोर का आखिरी भाग गठान लिये रहता है या फिर उसके एक-डेढ़ इंच की पतली सी लकड़ी बाँध दी जाती है। इसे हाथ की आखिरी दो अंगुलियों के बीच फिट कर भमरे-भमरी को अँगूठे तथा उसके पास वाली अंगुली के बीच रखकर, हाथ का मुड़ाव देकर जमीन पर गिराया जाता है। भमरा जमीन पर गिरते ही घूमने लगता है। उसकी डोर हाथ में ही रहती है। अच्छे होशियार बच्चे इस भमरे को अपने उसी हाथ की हथेली पर झेलकर घुमाते हैं। भमरा फेरना सामान्य कला नहीं है। अच्छे फिराने वाले भमरे को काफी देर तक फिराते हैं। तब वह गंभीर गूंज देता लगता है। भमरे की वह घूमने की तल्लीन क्रिया उसका 'टूंगना' कहलाती है।

खराद के खिलौने :

लकड़ी के बने खिलौनों की दृष्टि से उदयपुर के खराद के खिलौने दूर-दूर तक प्रसिद्ध रहे हैं। इन खिलौनों में भाँति-भाँति के छोटे-बड़े लट्टू, झुनझुना और पियाना, मोटर गाड़ी, रेल का इंजन, फिरकनी, पंखा, घोड़ा गाड़ी, झूमर, चूंकणी जैसे खिलौने बच्चों को बेहद पसंद हैं। आजादी से पूर्व कोयल, झूमर, फव्वारा, हमामदस्ता-मूसल, धागा, चकरी जैसे खिलौनों की बहार थी। गाड़ी नामी खिलौनों में बाबा गाड़ी, ऊंट गाड़ी, तोता गाड़ी, हाथी गाड़ी, भैसा गाड़ी, टमटम गाड़ी, पटपट गाड़ी, बैल गाड़ी जैसे खिलौने बहुत बनते थे। यहाँ के खिलौने खिरनी नामक लकड़ी से बनाये जाते, जो अधिक मुलायम, गांठ रहित तथा हल्की एवं चमक देने वाली होती है।

बच्चों को खेलने को कुछ न कुछ चाहिये। इसके लिए कई बार वे ऐसे खिलौने चाहते हैं, जिनके साथ तेजी से चल सकें, दौड़ सकें। इसके लिए बच्चा लोहे की चकरी लेकर उसे लोहे की तानी से चलाता है। यह तानी लोहे का तार होता है, जो एक सिरे पर जरा सा मोड़ दिया जाता है, जिसके सहारे चकरी पकड़ में रखती हुई रास्ता

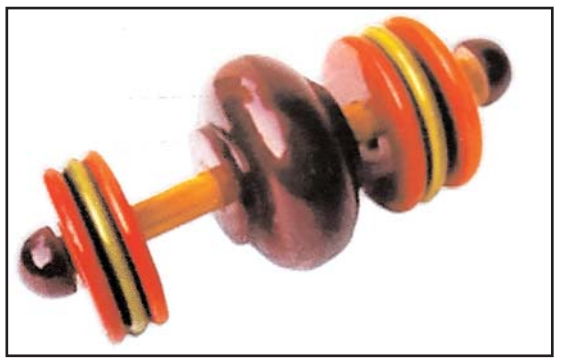

पकड़ती रहती है। तानी का दूसरा सिरा चलाने वाले के दांये हाथ में रहता है। चकरी का बड़ा रूप चकरा होता है। इसके साथ ही बच्चे साईकिल का पहिया जो खराब होकर अनुपयोगी हो जाता है, उसी को लेकर लकड़ी के डंडे से चलाते हैं। यह पहिया 'रिम' कहलाता है।

तुनतुन्या सवा-डेढ़ फीट लम्बी और पौन इंच चौड़ी बाँस की मोटी डांड होती है। इस डांड के एक सिरे पर ढाई इंच छोड़कर मिट्टी का बना सकोरा फिट कर दिया जाता है। सकोरा बीच में से पोला कर डांड निकाली जाती है। इस सकोरे के मुँह पर मोटे कागज को चारों ओर से मोड़कर चिपका दिया जाता है और ऊपर बीचोंबीच आधे इंच की आड़ी बाँस की फाँस लगा दी जाती है। डांड के दूसरे सिरे पर एक तीन इंची खूँटी डांड के बीच छेदकर निकाली जाती है। इसका ऊपरी भाग अपेक्षाकृत पतला होता है। इस खूंटी से लेकर मिट्टी के सकोरे के ऊपर की फांस को छूता हुआ लोहे का पतला तार निकाला जाता है। यह बच्चों का तुनतुन्या है। इसको बजाने के लिए बाँस की पतली सींक को धनुषाकार मोड़ देकर तांत के धागों से बांध दी जाती है। यह तुनतुन्ये का गज कहलाता है। इस गज को दांयें हाथ में पकड़कर बांये हाथ से पकड़े तुनतुन्ये के तार से रगड़ा जाकर सुर निकालते हैं।

गुल्ली-डंडा का खेल सभी जातियों के बच्चों द्वारा खेला जाता है। उसमें लकड़ी का एक गोल डंडा होता है और एक छोटी सी गुल्ली होती है। डंडा लगभग डेढ़ फीट की लम्बाई लिये होता है जबकि गुल्ली 3-4 इंच की होती है। डंडे का एक किनारा तीखा होता है जबकि गुल्ली के दोनों ओर के किनारे तीखे किये होते हैं। इन्हें 'कोया' कहते हैं। डंडे से गुल्ली के कोयों पर आघात किया जाता है। इससे गुल्ली उछाल मारती है, तब उछाल खाती गुल्ली को डंडे द्वारा फटकार कर दूर भगाई जाती है। जमीन पर गुल्ली खेलते समय नोकदार छोटा खड्ढ़ा खोदा जाता है जो 'खबड़ी' कहलाता है। इस खबड़ी पर गुल्ली आड़ी रखकर डंडे को दोनों हाथों से पकड़कर जोर लगाते हुए तीखी नोक द्वारा गुल्ली को दूर तक फेंकी जाती है। इसे विपक्षी दल वाले अपने हाथों में झेलते हैं। यदि किसी कारणवश नहीं झेल पाते हैं, तो खबड़ी से लगभग एक फीट दूर रखे आड़े डंडे को गुल्ली वाले स्थान से गुल्ली को फेंककर आते हैं। यदि गुल्ली डंडे को छू लेती है तो सामने वाला दल जीता हुआ समझा जाता है और नहीं छूने की स्थिति में फिर वही पदावनी का क्रम जारी रहता है।

मिट्टी के खिलौने :

खिलौनों का प्राचीनतम रूप मिट्टी के बने

खिलौने कहे जा सकते हैं। मेवाड़ में सर्वाधिक कलात्मक खिलौने मोलेला के प्रसिद्ध हैं। मिट्टी के देवी-देवताओं की विविध भाँति की प्रतिमाओं के साथ खिलौनों का निर्माण कर यहाँ के मूर्तिशिल्पी कुम्हारों ने बड़ा नाम कमाया है। ये खिलौने जानवरों, पक्षियों तथा देवी-देवताओं से संबंधित हैं। इनमें शिव-पार्वती, हनुमान, गरुड़, भैरू, मोर, तोता, पणिहारी, पुतली, गणगौर ईसर, गूजरी, हाथी, घोड़ा के खिलौने उल्लेखनीय हैं।

खांड के खिलौने :

खांड यानी चीनी के खिलौने बच्चों में न केवल खेलने के काम आते हैं, बल्कि खाने के भी काम आते हैं। ऐसे खिलौने खेलते समय टूट भी जाते हैं, तब बच्चे इन्हें आपस में बाँटकर खा लेते हैं। ये खिलौने सांचे से बनाये जाते हैं। जिस तरह के खिलौने बनाने होते हैं उस तरह के सांचे ले लिये जाते हैं और उनमें शक्कर की गरम चाशनी डालकर ठंडी कर ली जाती है। यह शक्कर बड़े कड़ाह में गरम की जाती है। इसका मैल दूध द्वारा साफ किया जाता है। शक्कर की चाशनी तब तक ओटाई जाती है, जब तक वह ठोस न हो जाय। खिलौने लकड़ी के बने ढांचे से

आसानी से निकल सके और टूटने नहीं पायें, इसके लिए उन्हें पानी से धो लिये जाते हैं, ताकि वे गीले रहें। खांड के इन खिलौने में मुख्यत: हाथी, घोड़े, हिरण, फूल, महल आदि बनाये जाते। ये खिलौने होली, दीवाली जैसे त्यौहार पर अधिक बनाये जाते। मेलों में भी इनकी बिकी होती देखी जाती।

शक्कर अर्थात् खांड के खिलौने की चर्चा में बैंगलोर में लगने वाली प्रदर्शनी की चर्चा आवश्यक है। यह प्रदर्शनी वहां की नीलगिरि संस्था द्वारा 19 दिसम्बर 1997 से 01 जनवरी 1998 तक लगी। इसके मूल में दिल्ली का लालकिला अद्भुत स्मारक के रूप में बड़ा चर्चित रहा जिसे 45 दिनों में 15 कारीगरों ने साढ़े चार टन शक्कर का इस्तेमाल कर तैयार किया।

इसको बनाने में एक लाख पिचहतर हजार की लागत आई। किले की चींटियों से रक्षा करने के लिए चारों ओर हळदी एवं काली मिर्च के चूर्ण का छिड़काव किया गया। यह किला 60 फीट लम्बे, 20 फीट चौड़े तथा 19 फीट ऊंचे विशालकाय तम्बू में विशेष सन्तुलित तापमान में रखा गया ताकि वह चिपचिपा होने से बचाया जा सके।

प्रदर्शनी में अन्य मुख्य मॉडलों में कमल पर बिराजित लक्ष्मी, जहाज, भव्य महल, ठेलागाड़ी, क्रिकेट स्टेडियम, विंटेज कार के अलावा मदर टेरेसा तथा राजकुमारी डायना की प्रतिमा तो जीवन्त ही आभास दे रही थीं।

कागज कुट्टी के खिलौने :

कागज कुट्टी, पेपरमेशी के बने खिलौनों में विभिन्न पशु-पक्षियों एवं मुखौटों के खिलौने सम्मिलित हैं। इन्हें बनाने के लिए किसी मटके-मटकी में आठ-दस दिन तक पानी के साथ कागज घोल दिया जाता है। घुलने के बाद इसे खूब मथेड़ा जाता है और तदनन्तर इसके साथ मेथी का आटा छानकर मिला दिया जाता है। आटा तथा कागज को एकमेक किया जाता है और उसके बाद खिलौने बनाये जाते हैं। इन खिलौनों में शेर, बंदर, हाथी, घोड़ा, ऊँट, मोर, मुखौटे, कबूतर, कौआ, पुतले-पुतली, ढूमले-ढूमली तथा गुल्लक-घूघरे आदि बनाये जाते हैं। जब ये धूप में अच्छी प्रकार सुखा लिये जाते हैं, तब इन पर लाल, हरे, नीले रंग के आकर्षक बेलबूटे बनाये जाते हैं। घूघरे बजने वाले होते हैं। इसके लिए उनमें छोटे-छोटे कंकड़ या फिर लोहे के छर्रे रखे जाते हैं।

पत्थर के खिलौने :

खिलौनों के रूप में पत्थर के बने तरह-तरह

के खिलौने बच्चों के मनबहलाव के अच्छे साधन रहे हैं। वे खिलौने हल्के पत्थर से बनाये जाते हैं, ताकि बच्चे इन्हें आसानी से उठा सकें और बनाने वाले को भी विशेष परिश्रम नहीं करना पड़े।

धातु के खिलौने :

भराव के खिलौने भरावा जाति के लोगों द्वारा बनाये जाते हैं। ये खिलौने मिट्टी और मोम के भरण से बनाये जाते हैं, जिनमें विशेष तकनीक

द्वारा पिघला हुआ पीतल उड़ेला जाता है। इसमें जहाँ-जहाँ मोम की परत बिछाई होती है, वहाँ वहाँ पीतल बिछ जाता है। मोम के ऊपर की ओर भीतरी तह की मिट्टी हटा लेने से पूरी की पूरी पीतल की आकृति उभर आती है। अत: दिखने में ये खिलौने पीतल के होते हैं। इन खिलौनों में छोटी-छोटी घंटियों, साँप, घूघरे, कछुए, शेर, हाथी, घोड़े, मगर, चिड़िया, मोर, दीपक एवं भाँति-भाँति की गाड़ियाँ, पुतलियाँ आदि मुख्य हैं।

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन
उदयपुर, शुक्रवार 15 दिसंबर 2023

सम्पादकीय

नई उम्मीदों के लिए चुनाव

अभी-अभी सम्पन्न हुए विधानसभा चुनावों में पिटीपिटाई परिपाटी, पिटेपिटाये अन्दाज और पिटीपिटाई परम्परा की परिपाटी इस कदर चकनाचूर हो गई कि राजनीतिज्ञों, राजनेताओं और भविष्य बुहारने वालों के अन्दाज औंधे मुंह हो गये। सत्तासीन पार्टी नेता अपनी मूंछों पर बड़े तेवर लिये ताव देते रहे कि राजस्थान में रीति और रिवाज बदलेगा यानी हर पांचवें साल सत्ता परिवर्तन का सिलसिला समाप्त होगा और पुन: कांग्रेस का हत्था सत्तासीन होगा।

ऐसे सारे वादे, ऐसी सारी सभाएं, ऐसे सारे जुलूस और ऐसे सारे यात्रा प्रसंग धराशायी हो गये। घोषणाओं के लोलीपोप भी जनता को, मतदाताओं को नहीं रिझा सके और मतदाताओं ने उनकी शत-प्रतिशत उम्मीदों पर पानी फेर दिया। ज्योतिषियों की भविष्य कथनी रेखाएं बिगड़ गईं। शीर्ष नेताओं के 'लिखलो' के झांसे डूंज वायरे में कहीं उड़ते भागते नजर आये।

हालांकि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने इस दौरान राजस्थान की जनता को काफी भरोसा दिलवाया था कि जनहितार्थ जो कार्य शेष रहे हैं वे भी पूरे किये जायेंगे। उनके द्वारा प्रत्येक जन को स्वास्थ्य सम्बन्धी जो सुविधाएं मुहैय्या करवाईं वे तो बेमिसाल थीं जिनका पूरे देश में अनुकरणीय तथा आदर्शजनित कदम रहा। महिलाओं के लिए भी उनकी आर्थिक सहायता सबओर सराही गई। उन्होंने 17 नये जिलों का निर्माण किया।

प्राय: हर जगह अशोक गहलोत कोई-न-कोई ऐसी मनभावन बात कहते रहे यथा- जो भी मुझसे मांगा जाएगा, सब दूंगा। तुम मांगते-मांगते थक जाओगे, मैं देता-देता कभी नहीं थकूंगा। लेकिन पता नहीं, जनता का क्या सोच रहा कि उनकी बातों को लगता है, गम्भीरता से नहीं लिया और परिणाम कुछ अलग 'नामुमकिन' ही रहा। वह कहावत सिद्ध हुई- 'रामई की चिड़िया, रामई का खेत, खाओ री चिड़िया भर-भर पेट।'

जनता के लिए खुले मन से खोलने वाला खजाना आखिर है तो जनता का ही। देने वाले का क्या जाता है। उनका यह अन्दाज भी सटीक नहीं बैठा। उन्होंने तो राजस्थान में साहित्यिक पुरस्कारों का ग्राफ अन्य प्रान्तों से सर्वाधिक करते ग्यारह-ग्यारह लाख के चार पुरस्कारों की घोषणा भी कर दी जिसका कोई अर्थ नहीं रहा। जिन अकादमियों में अध्यक्ष बिठाये वे भी अच्छी छवि नहीं दे पाये। बालसाहित्य और प्राकृत अकादमी की स्थापना कर उन्होंने प्रदेश में अकादमियों की बाढ़ ही ला दी पर उनका विशुद्ध राजनीतिकरण कर अपनी छवि ही धूमिल कर दी।

इधर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी जनता को वैसी ही गारंटी दी। उनकी सभाओं में भी अपार जनसमूह उमड़ा लेकिन फर्क यही रहा कि जनता ने उनके हर कथन पर अपने विश्वास का ठप्पा लगा दिया। सभाओं में मोदी की छवि देखते ही 'मोदी-मोदी' के नारों से सभास्थल को बड़ी देर तक गुंजाये रखा। 'मोदी है तो मुमकीन है' का विश्वास जनता को प्रामाणिक लगा और मोदी को आश्वस्त किया कि वोट तो एक देना है पर हम अपने दोनों हाथों से जिताने का वादा कर रहे हैं।

गारंटी कांग्रेस ने भी दी पर मोदी की गारंटी आम जनता को वजनी लगी। मोदी भी कहते रहे 'मोदी की गारंटी पूरी होने की गारंटी है।' उन्होंने अपने रहते जो भी योजनाएं प्रारम्भ कीं, उनका शिलान्यास तो किया ही, समयबद्ध समय से उन्हें पूरी कर जो विश्वास अर्जित किया उससे जनता को तनिक भी अविश्वास की कोई हवा नहीं छू पाई।

कांग्रेस की बुरी तरह जैसी पराजय हुई उससे स्वयं कांग्रेसी भी भौचक्के रह गये। सत्रह तो मंत्री ही हार गये। मोदी ने जहां जनता को अपना वोट देने के लिए प्रेरित किया वहां राहुल ने मजबूर किया। उनका जातिवाद का समीकरण भी नहीं चल पाया।

इस चुनाव में महिलाएं भी बड़ी मुखर रहीं। प्राय: हर चुनाव में महिलाएं अपने घरवालों के इशारे से अपना मत देती रहीं पर इस बार महिलाओं की अपनी निजी सोच ही नहीं रही अपितु उन्होंने अपने घरवालों को भी मजबूर किया कि वे मोदी उर्फ भाजपा को ही वोट दें।

इधर आम आदमी पार्टी ने भी अपना राष्ट्रीय फलक बढ़ाने इन चुनावों में पांचों राज्यों में अपने प्रत्याशी खड़े किये पर पांचों की जमानत जब्त होने से अपनी रही सही साख भी गंवानी पड़ी।

अब अगले वर्ष मई में लोकसभा के चुनाव होने वाले हैं। लोगों का विश्वास है कि मोदी ने इन चुनावों में विजयश्री प्राप्त करने के लिए प्रबल जीत की अपनी उम्मीदवारी पक्की कर ली है।

शादी की मन्नत मांगने वाला बड़

मुंगेर जिले के जमालपुर काली पहाड़ी पर मां काली की मन्दिर के बगल में स्थित वट वृक्ष से कुंवारे लड़के या लड़कियां ईंट बांधकर अपनी शादी के लिए मन्नत मांगते हैं। ऐसा माना जाता है कि कुंवारे लोगों के लिए यह वट वृक्ष वरदान है। शादी के लिए पेड़ की टहनी में लाल कपड़े में ईंट या उसका टुकड़ा लपेटकर बांध देने पर 90 दिनों में उसकी शादी हो जाती है। कई लोगों की मन्नत यहां पूरी हुई है। आज वे खुशहाल शादीशुदा जीवन जी रहे हैं।

शादी के बाद दाम्पत्य जोड़ा पेड़ पर बांधी गई ईंट को खोल देता है। यहां सिर्फ कुंवारे लड़के ही नहीं बल्कि कुंवारी लड़कियां भी वट वृक्ष से मन्नत मांगने आती हैं। स्थानीय निवासियों के अनुसार पहले यहां आने वाले लोगों की संख्या कम थी लेकिन अब सैकड़ों की संख्या में लोग यहां आते हैं। इस इलाके में यह चमत्कारी पेड़ 'शादी वाला पेड़' के नाम से बहुप्रसिद्ध है।

सृजनधर्मी सदैव अभूतपूर्व बना रहता है : डॉ. भानावत

उदयपुर शहर के चित्रकारों की जानीमानी संस्था टखमण-28 द्वारा 10 दिसम्बर को आयोजित प्रिंट मेकिंग कैम्प का उद्घाटन लोककलामर्मज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत ने किया। उन्होंने गर्व महसूस किया कि समारोह में देश की जानीमानी साहित्य, संस्कृति, कला के क्षेत्र में सृजनरत विभूतियों से रू-ब-रू होने का सुयोग मिला। डॉ. भानावत का मानना था कि अनेक लोग अपने नाम के साथ 'भूतपूर्व' लिखकर अपनी पहचान बनाते हैं जबकि निरन्तर सृजनरत रहता सृजनधर्मी अपने साधनाशील सृजनकर्म से सदैव अभूतपूर्व बना रहता है।

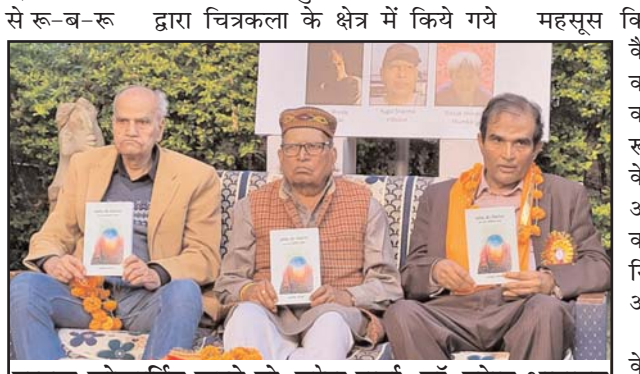

पुस्तक लोकार्पित करते प्रो. सुरेश शर्मा, डॉ. महेन्द्र भानावत एवं डॉ. संजीव कुमार। - फोटो : जितेन्द्र मेहता

समय के बदलते मिजाज और शहरीकरण होते ग्राम्यजनों की मन:स्थिति पर उन्होंने एक छोटी सी कविता सुनाई-

पहले मैं ही मैं था
अब शहर बढ़ गया है
मुझे कोई नहीं जानता
मन करता है
नेमप्लेट की जगह लटक जाऊं।

विशिष्ट अतिथि के रूप में नोएडा के सुप्रसिद्ध लेखक-प्रकाशक डॉ. संजीव कुमार की महनीय उपस्थिति समारोह को उत्कर्ष दे गई। टखमण के संस्थापक एवं कैम्प आयोजक प्रो. एल. एल. वर्मा ने बताया कि डॉ. संजीव लगभग 250 पुस्तकों के लेखक, सुप्रीम कोर्ट के सम्मान्य वकील तथा कवि के रूप में प्रसिद्धि लिए हैं। अपने प्रकाशन संस्थान इण्डिन नेटबुक्स प्रा. लि. द्वारा उन्होंने विविध क्षेत्रों में सृजनरत साहित्यकारों की पुस्तकें प्रकाशित कर न केवल भारत में अपितु विदेशों में भी पहचान बनाई है। बालसाहित्य के प्रकाशन में 6 वर्ष के बालक से लेकर सौ वर्ष के साहित्य लेखक की पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

डॉ. संजीव कुमार ने अपने कर्मशील कठोर जीवन की विविध उपलब्धियों का जिक्र कर साहित्य सर्जकों से उनके द्वारा अपने श्रेष्ठ सृजन का प्रकाशन करने तथा टखमण जैसी कला-संस्था को हर सम्भव सहयोग का आह्वान किया। इस मौके पर उन्होंने जीवन के विभिन्न पड़ावों पर रचित अपनी भावपूर्ण कविता सुनाकर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

मुख्य अतिथि टखमण के संस्थापक प्रो. सुरेश शर्मा ने टखमण द्वारा चित्रकला के क्षेत्र में किये गये कार्य-शिविरों पर प्रकाश डालते आगन्तुकों का बहुमान किया। उल्लेखनीय है कि प्रो. द्वय सुरेश शर्मा और एल. एल. वर्मा के अथक प्रयत्नों से निर्मित टखमण का कलाशाला भवन ही विविध कला-रूपों का करिश्मा बना हुआ है।

समारोह में हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक डॉ. सदाशिव श्रोत्रिय लिखित 'गालिब और लिमरेन्स तथा अन्य साहित्यिक निबन्ध' एवं कला समीक्षक विनोद भारद्वाज रचित 'राजस्थान में ए. रामचन्द्रन-चित्रकार ललित शर्मा के कैमरे से' पुस्तकों का लोकार्पण किया गया।

विमोचनकर्त्ता मंचासीन अतिथियों ने कहा कि प्रख्यात कवि, आलोचक एवं विचारक प्रो. श्रोत्रिय एक ऐसे गम्भीर लेखक हैं जिन्होंने सदैव सबसे हटकर प्रमुख कवियों की काव्यधारा का सर्वथा नवीन एवं मौलिक उद्भावनाओं का सटीक विश्लेषण किया है। इस दृष्टि से पुस्तक में चर्चित अज्ञेय, मुक्तिबोध, शमशेर, निराला तथा केदारनाथ की कविताओं पर लिखे निबन्ध लेखक की गहरी अन्तर्दृष्टि के सबूत हैं। यह पुस्तक भी लेखक ने हिन्दी कविता के गम्भीर पाठकों को समर्पित की है।

ललित शर्मा मूलत: नाथद्वारा की सुप्रसिद्ध पिछवाई कला-परम्परा-परिवार की पांचवी पीढ़ी के सशक्त कलाचेता हैं। ए. रामचन्द्रन उनके प्रिय कलाकार हैं जिन्हें उन्होंने अपने साथ उदयपुर तथा उससे लगे ग्रामीण क्षेत्रों में निवासरत आदिवासियों की जीवनधर्मिता से साक्षात्कार कराते धन्य महसूस किया है। ललितजी अपने कैमरे की आंख से सूक्ष्म कला-रूपों को दृष्टिगत करते चित्रों का सौन्दर्यमय रूपांकन करते हैं। वे कैमरे के माध्यम से अपने अन्तरमन की उदात्त कल्पनाजनित करिश्माई स्थितियों को कैद करने की अपूर्व क्षमता में दक्ष हैं।

उत्तर क्षेत्रीय संस्कृति केन्द्र पटियाला के विशेष सहयोग से आयोजित इस कला-शिविर में ग्राफिक कैम्प के प्रतिभागी कलाकारों का स्वागत एवं परिचय देते प्रो. एल. एल. वर्मा ने बताया कि इसमें हैदराबाद के प्रो. प्रवीण कुमार, मुम्बई के जिनसुक एवं विलास शिंदे, दिल्ली के रौनक गुप्ता, जयपुर के डॉ. विद्यासागर उपाध्याय एवं हर्षित वैष्णव तथा उदयपुर के सी. पी. चौधरी, ललित शर्मा, एल. एल. वर्मा, आर. के. शर्मा, नसीम अहमद, रघुनाथ शर्मा, शीतल चौधरी, दुगल शर्मा, सन्दीप पालीवाल, शाहिद परवेज, सुनील निमावत, प्रभुलाल गमेती आदि की उल्लेखनीय भागीदारी रहेगी। विविध माध्यमों एवं तकनीकी छापाचित्रों के सृजन के साथ नवीन कलापक्षों के सन्दर्भ को लेकर आपसी सम्वाद एवं विचार-विमर्श से न केवल प्रतिभागी बल्कि अन्य और भी युवा कलाकार लाभान्वित होंगे।

समारोह में बशीर अहमद परवेज, किरण आचार्य, दिलीप डामोर, समता पाठक, डॉ. अरूण चतुर्वेदी, डॉ. दुग्गड़, मकबूल, जितेन्द्र मेहता, डॉ. कहानी भानावत, प्रो. बसन्त कश्यप, सूरज सोनी, कमलकुमार मीणा, विजय जांगिड़, जगदीश सालवी, सहित शहर के कई कलाकार, कलारसिक उपस्थित थे। संयोजन प्रो. विद्यासागर उपाध्याय ने किया।

- डॉ. कहानी भानावत

डॉ. मनीषा वाजपेयी अचीवर अवार्ड से सम्मानित

उदयपुर (ह. सं.)। पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल के पेसिफिक आईवीएफ विभाग की साइन्टिफिक डॉयरेक्टर डॉ. मनीषा वाजपेयी को इंडियन फर्टिलिटी सोसाइटी द्वारा अचीवर अवार्ड से सम्मानित किया गया है। डॉ. मनीषा को यह सम्मान दिल्ली में चल रही 19वीं वार्षिक कांफ्रेंस 'फर्टीविजन 2023' के दौरान इंडियन फर्टिलिटी सोसाइटी के प्रेसिडेंट डॉ. के. डी. नायर द्वारा डॉ. मनीष को प्रजनन चिकित्सा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रदान किया गया।

राजस्थान से नि:संतानता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए डॉ. मनीषा को इस साल यह तीसरी बार सम्मान मिला है। डॉ. मनीषा को इंडियन सोसाइटी ऑफ असिस्टेड रिप्रोडक्शन के राष्ट्रीय सम्मेलन में 'ऐम्ब्रियोलॉजी ऐक्सिलेन्स अवार्ड' से सम्मानित किया जा चुका है। राजस्थान से यह पुरूस्कार पाने वाली डॉ.मनीषा वाजपेयी एक मात्र एम्ब्रियोलॉजिस्ट है। उल्लेखनीय है कि डॉ.वाजपेयी ने ऑस्ट्रेलिया के एडिलेड में एशिया पेसिफिक इनिशिएटिव ऑन रिप्रोडक्शन एस्पायर 23 में सेमिनल माइक्रोबायोम का आकलन और आने वाली पीढ़ी पर वीर्य मापदंडों पर इसके (सेमिनल माइक्रोबायोम) प्रभाव पर रिचर्स को प्रिजेन्ट किया। इस तरह का रिसर्च कार्य अभी देश में पहली बार ही हो रहा है एवं विदेशों में अभी शुरुआती चरण में ही है। आने वाले समय में पेसिफिक आईवीएफ की इस रिसर्च से मेल इन्फर्टीलिटी के इलाज में बहुत मदद मिलेगी, साथ ही आईवीएफ की सफलता की दर बढ़ेगी। कुछ नए तरीके से आईवीएफ का इलाज भी किया जा सकेगा। यह रिसर्च पीएमसीएच आईवीएफ एवं विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग राजस्थान सरकार की ओर से शुरू की गई है।

चेस्ट सम्मेलन नैपकॉन में डॉ. अतुल लुहाड़िया बने फैकल्टी

उदयपुर (ह. सं.)। हैदराबाद में आयोजित देश के सबसे बड़े राष्ट्रीय चेस्ट सम्मेलन नैपकॉन में गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के टीबी एवं श्वांस रोग विशेषज्ञ डॉ. अतुल लुहाड़िया को उदयपुर से फैकल्टी के रूप में बुलाया गया। उन्होंने जटिल अस्थमा, अनकंट्रोल्ड अस्थमा एवं एलर्जिक ब्रोंकोपल्मोनरी एस्पर्जिलोसिस (एबीपीए) नामक फेंफड़ों की बीमारियों पर पैनल डिस्कशन कर अपना अनुभव साझा किया। उन्होंने बताया कि जिन मरीज़ों में अस्थमा के लक्षण नियमित दवाइयों से कंट्रोल नहीं होते हैं, उनमें इनहेलेशन की तकनीक को चेक करना चाहिए तथा जटिल अस्थमा एवं ए.बी.पी.ए. के लिए जाँचना चाहिए ताकि जल्द ही उनका निदान एवं ईलाज किया जा सके। सम्मेलन के साईंटिफ़िक कमिटी के चेयरमैन एवं नई दिल्ली एम्स के पूर्व डायरेक्टर पदमश्री डॉ. रणदीप गुलेरिया ने डॉ. अतुल को फैकल्टी मोमेंटो प्रदान किया। सम्मेलन में देश-विदेश से लगभग 3000 चेस्ट विशेषज्ञों ने भाग लिया।

प्रशांत अग्रवाल राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित

उदयपुर (ह. सं.)। विश्व दिव्यांगता दिवस 3 दिसम्बर को केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा विज्ञान-भवन, नई दिल्ली में मुख्य अतिथि राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू ने नारायण सेवा संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल को दिव्यांगजन सशक्तिकरण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए 'सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति' श्रेणी में राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया। समारोह की अध्यक्षता केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार ने की। इस दौरान केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्यमंत्री रामदास अठावले, प्रतिमा भौमिक और ए. नारायणस्वामी उपस्थित थे। प्रशांत अग्रवाल ने कहा कि यह सम्मान उन दिव्यांग भाई-बहिनों का है जिनके जीवन में खुशी आई और संस्थान से लाभान्वित हुए। संस्थान संस्थापक चेयरमैन कैलाश मानव ने कहा कि यह पुरस्कार हमें ओर कर्तव्यनिष्ठा और नम्रतापूर्वक सेवा करने की प्रेरणा देता रहेगा।

6-एयरबैग के साथ नई किआ सॉनेट लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। भारत की अग्रणी मास प्रीमियम कार निर्माता, किआ ने अपने दूसरे सबसे ज्यादा बिकने वाले इनोवेशन, द न्यू सॉनेट के नए अवतार को सबसे पहले भारत में पेश किया है। अधिक मजबूत और स्पोर्टी सॉनेट को तकनीक-प्रेमी और वन-स्टॉप मीबिलिटी समाधान चाहने वाले आधुनिक जोड़ों और पेशेवरों को ध्यान में रखते हुए डिज़ाइन किया किया है। इसमें 10 ऑटोनॉमस सुविधाओं वाला एडैस दिया गया है, जिनमें फ्रंट कोलिज़न अवॉइडेंस असिस्ट, लीडिंग व्हीकल डिपार्चर अलर्ट और लेन फॉलोइंग असिस्ट जैसे कुछ नाम शामिल हैं। नई सॉनेट अपने सेगमेंट में 15 मानक सुरक्षा सुविधाएं पेश करने वाली एकमात्र कॉम्पैक्ट एसयूवी भी बन गई है। इसके अलावा, इसमें 10 बेस्ट-इन-सेगमेंट सुविधाएं भी दी ई हैं, जिसमें डुअल स्क्रीन कनेक्टेड पैनल डिज़ाइन, रियर डोर सनशेड कर्टन, ऑल डोर पावर विंडो वन टच ऑटो अप/डाउन, सुरक्षा के साथ और स्मार्टप्योर एयर प्यूरीफायर वायरस और बैक्टीरिया सुरक्षा के साथ शामिल है। कैरेंस के साथ उद्योग में पहली बार मानक 6 एयरबैग और सेल्टॉस के साथ सेगमेंट में पहली बार एयरबैग पेश करने के बाद, किआ एक बार फिर सुरक्षा मानदंडों को फिर से परिभाषित कर रहा है।

यादवेन्द्र, माहिका सातवें स्थान पर रहे

उदयपुर (ह. सं.)। खेलों इंडिया की ओर से नई दिल्ली में आयोजित ऑल इंडिया इंटर युनिवर्सिटी शुटिंग चेम्पियनशीप प्रतियोगिता में जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय के विद्यार्थी यादवेन्द्र चुण्डावत, माहिका कितावत ने ऑल इंडिया में सातवें स्थान पर अपनी जगह बनाई है। कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत, स्पोट्स बोर्ड सचिव डॉ. भवानीपालसिंह राठौड़, कोच डॉ. जितेन्द्रसिंह मायदा ने दोनों ही खिलाड़ियों को बधाई देते हुए कहा कि यह संस्था के लिए गौरव की बात है। प्रो. सारंगदेवोत ने कहा कि विद्यापीठ में स्पोर्ट्स हब बनाया जाएगा , जिसमें बेहतर सुविधाएँ, प्रशिक्षण की व्यवस्था करके उत्कृष्ट खिलाड़ी तैयार किए जायेंगे। उसी को ध्यान में रखते हुए, विद्यापीठ के श्रमजीवी महाविद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की शूटिंग रेंज तैयार की जा रही है जिसका कार्य अंतिम चरणों में और इसका शुभारंभ नवीन सत्र से कर दिया जायेगा। आज हमारे विद्यार्थी हर खेल में आगे है, आवश्यता है उन्हें उचित मार्ग दर्शन एवं प्रोत्साहन देने की।

नारायण लिम्ब से भूमि का जीवन हुआ आसान

उदयपुर (ह. सं.)। नारायण सेवा संस्थान ने हाल ही में पांच साल की एक बालिका के पांव को नि:शुल्क कृत्रिम अंग पहना कर उसके उठने, बैठने और चलने की मुश्किल को आसान कर दिया।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि नीम का थाना (राजस्थान) की भूमि यादव का बाएं पांव जन्मजात दायां पांव से करीब 10 इंच छोटा था। जिससे उसे उठने, बैठने व चलने में न केवल परेशानी होती थी, बल्कि दूसरे पांव के भी घुटने से नाकाम होने की आशंका थी। पिछले 5 नवम्बर को उसके दादा-दादी भूमि को संस्थान में लेकर आए, जहां संस्थान के विशेषज्ञ चिकित्सकों व कृत्रिम अंग निर्माण विभाग के तकनीशियनों ने विशेष कृत्रिम अंग बनाकर चार दिन तक उसे उठने, बैठने व चलने का प्रशिक्षण दिया। अब वह बिना सहारे व दायां पांव को मोड़े बिना आसानी से चल लेती है।

सांप्रदायिक सौहार्द के लोककवि मास्टर अजीज

- अश्विनीकुमार आलोक -

मास्टर अजीज का जन्म तो मुसलमान परिवार में हुआ था, लेकिन कोई यह विश्वास और तर्क के साथ नहीं कह सकता कि वह मुसलमान ही थे। वह हिंदू देवी-देवताओं के कीर्तन लिखते और गाते रहे लेकिन यह स्पष्ट रूप से किसी ने न कहा कि मास्टर अजीज हिंदू थे। उनकी मृत्यु के बाद भी उनके धर्म का निर्णय न किया जा सका। उन्हें न तो श्मशान घाट ले जाया गया और न ही कब्रिस्तान में ज़मींदोज़ किया जा सका।

वास्तव में उन्हें किसी खेत में गाड़ दिया गया, जो उनकी अंतिम इच्छा थी। सम्भवत: बीसवीं सदी की यह अकेली घटना होगी, जो मास्टर अजीज जैसे लोककवि, समाज हितैषी को स्मरण करते रहने के लिए पर्याप्त है। मास्टर अजीज भक्त-कवि,भजन-गायक और परिश्रमी मनुष्य के रूप में सदैव याद किये जाते रहेंगे। उनकी तुलना हिन्दी और उर्दू-फारसी के कवियों से की जाती रहेगी लेकिन वह कबीरदास की तरह अपने ईष्टदेव की जाति या उनके सम्प्रदाय को लेकर लोगों के निर्णयों या मतों की परवाह किये बगैर अपनी रचनाओं में जीवित रहेंगे। मास्टर अजीज अपने समय से लेकर आनेवाले समय में देश और दुनिया के लिए संशय विहीन अपनत्व तथा सादगी के लिए जाने जाते रहेंगे। लोग उनके गीतों में मत और सम्प्रदाय को खोजते फिरें, लेकिन वह सद्भाव और एकेश्वर को मानने वाले लोकभावना के कवि के रूप में समादृत होते रहेंगे।

मास्टर अजीज ने पारिवारिक अंतर्द्वंद्व के विरुद्ध शांति-प्रतिष्ठा के लिए अपने भजन में ईश्वर स्तुति को उपयोगी बताया। वह भगवान राम के नाम जप को जीवन में सर्वोच्च बताने वाले निष्काम कर्म के आग्रही कवि रहे -

घर में कलह बाहर जाता खरचा
कतहीं न होता राम नाम के चरचा
मास्टर अजीज कहल राम नाम के अरचा
जम्हपुर में जब देखल जइहें परचा
सीताराम जप मन माया से हट के हो
नाहके मरत नर बेटा बेटी रह के हो

कृष्ण और गोपियों के राग रंग को अनेक भक्त कवियों ने अपनी कविताओं और अन्य रचनाओं का आलंबन बनाया है। मास्टर अजीज ने कृष्ण द्वारा कंकड़ मारकर गगड़ियाँ फोड़ दिये जानेवाले प्रसंग का रोचक वर्णन किया है -

गगरी मोर फोड़ देले कन्हैया
साड़ी मोरी फाड़ देले
गारी से ताड़ि देले
बहियाँ दिहले झकझोर
कहत अजीज शनिचर के दिन रहे
कहब पंचायत बटोर

मास्टर अजीज ने जीविका के लिए मजदूरी की। उन्होंने पहले पहल मढ़ौरा के जिस मिठाई कारखाने में काम किया, उसका नाम था 'मार्टिन मिल'। वहाँ वह बहुत दिनों तक टिक नहीं सके। उसके बाद उत्तरप्रदेश के महोली चीनी मिल में नौकरी की। वहाँ भी मन नहीं लगा। तब राजमिस्त्री का काम किया। वह दिन में मजदूरी करते और रात में भजन कीर्तन करते थे। उनकी मण्डली के लोगों में अधिकांश लोग भी मजदूर ही थे। मजदूरों की विडंबनाओं को भी उन्होंने अपनी रचनाओं का वर्ण्य बनाया-

किस्मत से जाके पूछ काहे बाँझ हो गइल
रहिया के ताकते ताकत साँझ हो गइल
रकत जरा के खान कारखाना बनाइ हम
रोटी सूखल बा नून के मोहताज हो गइल
अजीज कोठा अमारी नित बनाइ हम
पीये के खून हमार ओकर काज हो गइल

महात्मा गांधी जनमानस की आदरणीय प्रेरणा रहे। उनकी हत्या सिर्फ किसी नेता की हत्या नहीं, बल्कि विचार और चरित्र की हत्या थी। मास्टर अजीज के एक गीत में महात्मा गांधी की हत्या को लेकर उपजा भाव किसी सुहृदय के हृदय से निकला हुआ क्रंदन जैसा है -

कौन मरलस हमरा गांधी के गोली रे दमादम बम के गोला
पूजा करे जात रहलन बिरला भवनमा
मुँहवाँ से निकले हरे राम के बोली रे
दमादम बम के गोला
एक गोली मरलस दूसर गोली मरलस
तिसर गोली मारे हाला होली रे
दमादम बम के गोला

मास्टर अजीज के लिखे हुए बारहमासा में ग्रामीण जीवन के दैन्य का मार्मिक वर्णन हुआ है-

अगहन आग लगाइ गइले जियरा धनकाइ गइले हो
गंगा मइया पूसवा में फूसवा जुड़त नइखे मड़ई दहाइ गइले हो
माघ महीना घरे आइ गइले देह ढिढराइ गइले हो
मइया लुगरिया के गाँथत गुदरिया
उमरिया ओराइ गइले हो

मन्दिर-मस्जिद के झगड़े को निरर्थक बतानेवाली उनकी गीत रचना आज भी प्रासंगिक बनी हुई है -

मंदिर में राम मस्जिद में रहीम
दाढ़ी जनेऊ के झूठे ई नकेल बा
पढ़त कुरान कोई बाँचत पुरान बा
एके समझावहीं में दुनो गुइयाँ फेल बा
पाखंड के विरुद्ध उन्होंने कबीर की तरह आवाज उठायी है -

साधु लोग भुलाइल बा जटा जूट झूल में
हमनी भुलाइल बानी चाम पटी चूल में
औरत लोग भुलाइल बा आइरिन कनफूल में
लड़िका लोग भुलाइल बाड़े बेसिक इसकूल में

मास्टर अजीज सामाजिक क्रांति के दूत थे। ब्रिटिश शासन के आरम्भिक दौर में ही नवजागरण का सूत्रपात हुआ। इसमें 1857 से 1947 के बीच का काल जैसा रहा, उसकी अनुगूँज तत्कालीन साहित्य का स्वर बनी। हम मास्टर अजीज की रचनाओं का महत्त्व इस रूप में भी आँक सकते हैं कि गांधीजी के नेतृत्व में जो क्रांति हुई, मास्टर अजीज की रचनाएँ उसी पृष्ठभूमि पर संस्कृति और धर्म सुधार के लिए चेतना जगाती हैं। वह भोजपुरी भाषी थे लेकिन उन्हें संस्कृत समेत छह भाषाओं का ज्ञान था। गरीबी के कारण वह हाई स्कूल में दाखिला भी नहीं ले सके थे लेकिन धर्म और ज्ञान के अनेक ग्रंथ पढ़े थे।

मास्टर अजीज का जन्म 5 मार्च 1910 ईस्वी को बिहार के सारण जिलांतर्गत कर्णपुरा गाँव के निकट हुआ था। यह गाँव अमनौर रेलवे स्टेशन के करीब है। पिता रसूलबख्श कलकत्ता में ठेकेदारी करते थे। बंगाल के टीटागढ़ के आसपास उन्होंने उर्दू-फारसी और बांग्ला की पढ़ाई की। 1925 में गाँव आ गये। गाँव में संस्कृत और हिंदी पढ़ी। जीवन में अनेक परेशानियाँ झेलीं और जीविका के लिए संघर्ष किये। उन्हें ईश्वर पर अटूट विश्वास था। वह ईश्वर में धर्म के आधार पर भेद नहीं करते थे। मुसलमान परिवार में जन्म भले लिया था, हिन्दू देवी-देवताओं का गुणगान करते थे।

1940 में उन्होंने ग्रामीणों के सहयोग से कीर्तन मण्डली बनायी थी और आजीवन भजन-कीर्तन करते रहे थे। वह तुलसीदास की तरह समन्वयवादी थे। उन्होंने अपनी भक्ति रचनाओं में सगुण और निर्गुण दोनों ही भावधाराओं को जगह दी। एक ओर उन्होंने सगुण रस की रामभक्ति की, तो दूसरी ओर उसी धारा के सूरदास और रसखान की कृष्णभक्ति का भी अनुसरण किया। कबीर की तरह निर्गुण ब्रह्म की उपासना की और अंधविश्वास, पाखंड और रूढ़िवाद का विरोध किया।

जिस तरह देहांत के बाद कबीरदास के अनुयायियों में उनके शव के अंतिम संस्कार को लेकर विवाद हो गया था, मास्टर अजीज के शव को लेकर भी वैसी ही परिस्थिति उत्पन्न हो गयी। 1973 की तारीख थी 5 मई, समय आठ बजकर पाँच मिनट, जब उनका निधन कैंसर के कारण हो गया था। वह अपने मित्र हजारी मियाँ से बात करते हुए लेट गये थे और चल बसे थे। उनके निधन पर हर धर्म के लोगों में शोक देखा गया था लेकिन शव के अंतिम संस्कार को लेकर जब विवाद बढ़ा तो मास्टर अजीज के मित्र नारायणपुर गाँव निवासी वैद्य जगदीश्वर पांडेय ने मास्टर अजीज की माँ महलूदन बेगम से बात की। महलूदन बेगम ने बताया कि मास्टर अजीज की इच्छा थी कि मृत्यु के बाद उनका शव किसी खेत में गाड़ दिया जाये। ऐसा ही हुआ। मास्टर अजीज किसी एक धर्म के नहीं, सर्वधर्म समभाव के लोककवि और समाज हितैषी के रूप में जाने जाते रहेंगे।

पत्र मिला

'फर्श से अर्श तक' पहुंचने की कहानी

'झोंपड़ी से बंगले तक' की गाथा वीर प्रसूता भूमि राजस्थान के मेवाड़ अंचल के सपूत डा. राजमल लोढ़ा के जीवन -संघर्ष की प्रेरणादायक आत्मकथा गांव से लेकर विदेश तक के समाज के हर प्राणी के लिए सफलता की ऊंचाइयां छूने का अपने आप में एक विरल उदाहरण है।

संघर्ष और जीवट के धनी डा. लोढ़ा ने सरल भाषा में आने वाली पीढ़ी के लिए ऐसा प्रस्तुत कर दिया है जिसे 'फर्श से अर्श तक' पहुंचने की कहानी कह दिया जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं। कंटकाकीर्ण विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए सामने आए अवसर को पहचानने की कला यदि किसी को सीखनी हो तो आपकी यह छोटी सी आत्मकथा 'गागर में सागर' की एक बानगी है। समाज सेवा का भाव और अपने स्वजनों को भी साथ लेकर आगे बढ़ाने में सहयोग, परमार्थ आदि वे विशिष्टताएं हैं, जो आपकी वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को चरितार्थ करती है।

क्या शैक्षणिक, क्या सामाजिक अथवा धार्मिक सभी उपलब्धियां एक से बढ़कर एक हैं जिन पर जितना लिखा जाए उतना ही कम है। ऐसे में यह जीवन गाथा सभी के लिए प्रेरणास्पद है।

-डॉ. कल्याण प्रसाद वर्मा

बाजार / समाचार

एचडीएफसी बैंक और आईडीए में एमओयू

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक और इंडियन डेंटल एसोसिएशन (आईडीए) ने नए स्नातक दंत चिकित्सकों को अपनी दंत चिकित्सा

पद्धतियां स्थापित करने के लिए निर्बाध और परेशानी मुक्त फंडिंग की पेशकश करने के लिए एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। इससे देश में मौखिक स्वास्थ्य देखभाल के बुनियादी ढांचे को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी। इस पहल के तहत दिए गए ऋण की गारंटी सूक्ष्म और लघु उद्यमों के लिए क्रेडिट गारंटी फंड ट्रस्ट (सीजीटीएमएसई) द्वारा दी जाएगी, जो भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) मंत्रालय और भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) की एक संयुक्त पहल है।

समझौता ज्ञापन पर सुश्री गायत्री राव कोर्डे – जोनल हैड और वरिष्ठ उपाध्यक्ष, एचडीएफसी बैंक, सुमित याग्निक – वरिष्ठ उपाध्यक्ष, बिजनेस लोन, एचडीएफसी बैंक और डॉ. अशोक ढोबले – माननीय सेक्रेटरी जनरल, आईडीए ने मुख्य अतिथि, संदीप वर्मा – सीईओ, सीजीटीएमएसई, राजीव कुमार, कार्यकारी उपाध्यक्ष – एचडीएफसी बैंक, फैसल सारा, कार्यकारी उपाध्यक्ष – एचडीएफसी बैंक, राघवेंद्रस्वामी मैनांपती – जोनल हैड, एचडीएफसी बैंक, डॉ. कश्मीरा हडकर – परियोजना प्रमुख, आईडीए और एचडीएफसी बैंक और आईडीए के अन्य वरिष्ठ अधिकारियो की उपस्थिति में हस्ताक्षर किये

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में प्रति 10,000 आबादी पर दो दंत चिकित्सक हैं। यह साझेदारी एचडीएफसी बैंक के पूर्व जोनल प्रमुख स्व. नीलेश सामंत के दिमाग की उपज थी और उनके प्रयास तीनों संगठनों को एक आम मंच पर लाने में सहायक थे। इस विशिष्ट रूप से तैयार की गई पहल का उद्देश्य देश में मौखिक स्वास्थ्य देखभाल के नियादी ढांचे को बढ़ाना और स्वास्थ्य देखभाल वित्त को बढ़ावा देना होगा। यह भारत सरकार के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय की राष्ट्रीय मौखिक स्वास्थ्य नीति के अनुरूप है।

पिम्स हॉस्पिटल उमरड़ा और सैन्य अस्पताल में एमओयू

उदयपुर (ह. सं.)। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, पिम्स अस्पताल,

उमरड़ा काफी समय से अपने देश के वीर सैनिकों व उनके परिवार का बखूबी इलाज कर रहा है। इसके तहत मंगलवार को 185 सैन्य अस्पताल और पिम्स अस्पताल के बीच एमओयू हुआ।

एमओयू पर पिम्स अस्पताल के चेयरमैन अशीष अग्रवाल, मेडिकल सुप्रिटेंडेट डॉ. चंद्रा माथुर और 185 सैन्य अस्पताल के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल यादवेंद्रसिंह यादव ने हस्ताक्षर किए। इस समझाते का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक आपदाओं, मानव निर्मित संकटों और युद्ध के समय स्वास्थ्य सेवा संसाधनों को साझा करना है। इससे आपातकालीन स्थिति में भारतीय सेना की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकेगा। एमओयू साइन के दौरान रजिस्ट्रार देवेन्द्र जैन, डॉ. कमलेश, प्रतीक अग्रवाल, कोमल, चारू, जयप्रकाश त्यागी आदि मौजूद थे। इसका कॉर्डिनेशन रेडियोलॉजी इंचार्ज जयप्रकाश त्यागी ने किया।

इस अवसर पर पिम्स अस्पताल के चेयरमैन अशीष अग्रवाल और चेयरपर्सन श्रीमती शीतल अग्रवाल ने कहा कि ये हमारे अस्पताल के लिए बहुत गर्व की बात है कि हमारा अस्पताल आपदा में अपने देश के वीर सैनिकों के काम आ सके। उन्होंने भारतीय सेना का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे लिए हर्ष का विषय है कि देश के सैनिक हमारे अस्पताल पर अपना भरोसा करते हैं।

जिंक फुटबॉल अकादमी को मिली 'एलिट 3 स्टार रेटिंग'

उदयपुर (ह. सं.)। हिंदुस्तान जिंक की एक सीएसआर पहल जिंक फुटबॉल अकादमी को ऑल

इंडिया फुटबॉल फेडरेशन द्वारा प्रतिष्ठित 'एलीट 3-स्टार' रेटिंग से सम्मानित किया गया।

हिंदुस्तान जिंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरुण मिश्रा ने कहा कि यह एक ऐतिहासिक क्षण है। हमारी अकादमी अब आधिकारिक तौर पर देश में सर्वश्रेष्ठ अकादमियों में से एक है। यह मान्यता हमारी पूरी टीम के लिए एक बड़ा सम्मान है। जिंक फुटबॉल अकादमी का कार्यक्रम, पूर्ण-छात्रवृत्ति मॉडल के साथ, युवा फुटबॉल प्रतिभा को बढ़ावा देने और प्रेरित करने के लिए प्रतिबद्ध है, और इसने बहुत कम समय में कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं। अकादमी वर्तमान में अंडर-13, अंडर-15, अंडर-17 और अंडर-19 आयु समूहों के अंतर्गत वर्गीकृत 70 से अधिक उभरते फुटबॉलरों की मेजबानी करती है।

राजस्थान फुटबॉल एसोसिएशन के सचिव दिलीपसिंह शेखावत ने कहा कि भारत में सर्वश्रेष्ठ फुटबॉल अकादमियों में स्थान पाने पर जिंक फुटबॉल अकादमी को बधाई देते हैं। यह न केवल जिंक फुटबॉल के लिए बल्कि पूरे राजस्थान के लिए सम्मान और गर्व का क्षण है। यह हमारे फुटबॉल समुदाय के भीतर विकसित प्रतिबद्धता और असाधारण प्रतिभा को दर्शाता है और राजस्थान में फुटबॉल के उज्ज्वल भविष्य का प्रमाण है। एलीट श्रेणी की रेटिंग जिंक फुटबॉल अकादमी के लिए आईएसएल और आई-लीग क्लबों की युवा टीमों के साथ प्रतिष्ठित एआईएफएफ यूथ लीग में खेलने का मार्ग प्रशस्त करती है।

एचडीएफसी बैंक की परिवर्तनकारी पहल

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक ने अपने सीएसआर ब्रांड परिवर्तन के माध्यम से ग्रामीण भारत के कई राज्यों में महिला नेतृत्व वाले परिवारों के उत्थान के उद्देश्य से एक परिवर्तनकारी पहल शुरू की है। इस परियोजना का लक्ष्य झारखंड, राजस्थान, असम, त्रिपुरा और मेघालय सहित राज्य हैं। इस पहल के लिए बैंक ने द/नज के साथ सहयोग किया है।

कार्यक्रम का प्राथमिक उद्देश्य महिला नेतृत्व वाले परिवारों को कौशल प्रशिक्षण और आजीविका वृद्धि के अवसर प्रदान करना, स्थायी आय सृजन को बढ़ावा देना है। इस पहल के माध्यम से इन परिवारों को न्यूनतम रुपये की वार्षिक आय सुरक्षित करने के लिए सशक्त बनाना है। प्रति परिवार 10,000, जिससे ग्रामीण समुदायों में आर्थिक स्वतंत्रता और स्थिरता आएगी। 'द एंड अल्ट्रा पॉवर्टी प्रोग्राम' नाम की पहल, महिलाओं के नेतृत्व वाले परिवारों को वित्तीय रूप से आत्मनिर्भर बनने के लिए आवश्यक उपकरण और संसाधन प्रदान करके उन्हें सशक्त बनाने की एचडीएफसी बैंक की प्रतिबद्धता का एक प्रमाण है। एचडीएफसी बैंक में सीएसआर की प्रमुख सुश्री नुसरत पठान ने कहा, हमारा मानना है कि महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण समावेशी विकास को आगे बढ़ाने में बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण है।

दरों में फिलहाल कटौती शुरू नहीं करेगा रिज़र्व बैंक : बरूआ

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक के चीफ इकोनोमिस्ट मि. अभीक बरूआ ने उम्मीद जताई है कि आरबीआई 2024 में जून/अगस्त नीति से पूर्व अपनी दर कटौती चक्र (रेट कट साइकिल) शुरू नहीं करेगा। रिज़र्व बैंक द्वारा घोषित मौद्रिक नीति पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुऐ अभीक बरूआ ने कहा कि आरबीआई ने अपनी नीति को यथायत रखा है, क्योकि उम्मीद के मुताबिक केन्द्रीय बैंक ने अपनी नीति दर और रूख अपरिवर्तित रखा था हालांकि रिज़र्व बैंक पिछली नीति की तुलना में तरलता प्रबंधन पर कम आक्रामक लग रहा था, जिसे तटस्थता की ओर बढ़ने के सकेंत के रूप में देखा जा सकता है।

इसका तात्पर्य यह है कि आरबीआई एक महत्वपूर्ण सरप्लस के खिलाफ कार्रवाई करने की संभावना रखता है, लेकिन यह भविष्य में बड़े घाटे का पक्ष भी नहीं ले सकता है। हम टैक्स आउटफ्लो के कारण तरलता पर निकट अवधि में कुछ गिरावट का दबाव देख रहे हैं, लेकिन उच्च सरकारी खर्च और विदेशी प्रवाह के कारण 2024 से शुरू होने वाली स्थिति अधिक आरामदायक होगी। इसके अलावा, आज आरबीआई द्वारा सप्ताहांत और छुट्टियों पर एसडीएफ और एमएसएफ विंडो खोलने जैसे संरचनात्मक परिवर्तन भी सिस्टम में अधिक सिमेट्रिक तरलता संतुलन में मदद कर सकते हैं। आने वाले महीनों में ओवरनाइट रेट एमएसएफ के करीब होने से रेपो रेट की ओर बढ़ना शुरू हो सकता है। तरलता का रुख भी आरबीआई के मुद्रास्फीति पूर्वानुमान के अनुरूप प्रतीत होता है जो वित्त वर्ष 2015 में पहली तिमाही और दूसरी तिमाही में 5.2 प्रतिशत और 4 प्रतिशत की ओर क्रमिक वृद्धि दर्शाता है।

स्पाइस कोर्ट रेस्टोरेंट उदयपुर का शुभारंभ

उदयपुर (ह. सं.)। पद्मिनी बाग रिसॉर्ट बाय इनवेनट्रीज़ में स्पाइस कोर्ट रेस्टोरेंट का शुभारंभ 9 दिसंबर को हुआ। इस रेस्टोरेंट के साथ इनवेनट्रीज़ होटल्स सुकूनदायक और

मनमोहक लोकेशन पर अद्वितीय होटल्स और रिसोर्ट के जरिये, अद्भुत अनुभव का अवसर लेकर आई है। एक ऐसी जगह जिसकी प्रकृति, डिजाइन और विरासत सबसे अनूठे हैं और जो अपने आसपास मौजूद समुदाय व पर्यावरण के सह-अस्तित्व में रहने का प्रयास करती है। यह जानकारी प्रेसवार्ता में पद्मिनी बाग रिसॉर्ट इनवेनट्रीज़ होटल्स के सुदीप्ता देव, पद्मिनी बाग रिसॉर्ट उदयपुर के डॉ. पृथ्वीराज चौहान एवं रिसोर्ट मैनेजर सुमन मैथी ने दी।

सुदीप्ता देव ने बताया कि उदयपुर एयरपोर्ट से करीब 15 मिनिट व एयरपोर्ट से 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित पद्मिनी बाग रिसॉर्ट विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ उत्कृष्ट रिसॉर्ट है। यह हिल साइड रिसॉर्ट उत्तम सौंदर्य को अनूठे क्षेत्रीय आकर्षण के साथ मिलाकर प्रस्तुत करता है और यह अनूठापन व गरिमा इसके द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं से लेकर भोजन व्यंजन, परम्पराओं सभी चीजों में झलकती है जो मिलकर एक शानदार अनुभव प्रदान करते हैं।

रिसोर्ट में 33 रुम क्लस्टर विला और 24 विरासत शैली में रुम हैं जिनकी कुल सख्या 57 रुम हैं। प्रत्येक विला भव्यता से मस्तक उठाये अरावली की श्रृंखला के मनोहारी दृश्य की ओर खुलता है जो कि आधुनिक विरासत के साथ साथ सुकूनदायक लैंडस्केप का नजारा प्रस्तुत करता है। यह सारी खूबियां मिलकर इसे एक संतुष्टिदायक, ऊर्जा देनेवाला और निजता से भरपूर स्थान बना देती है। इन तमाम खूबियों के साथ ही यहां एक्सक्लूसिव पूल व बारबेक्यूव, प्राइवेट पार्टीज के लिए एक पर्सनल डेक भी उपलब्ध है जो स्पाइस कोर्ट रेस्टोरेंट इनवेनट्रीज़ पद्मिनी बाग रिसॉर्ट उदयपुर को प्रकृति के आँचल में सजे गुलदस्ते की तरह मनमोहक बना देता है।

डॉ. पृथ्वीराज चौहान ने बताया कि पद्मिनी बाग रिसॉर्ट इनवेनट्रीज़ उदयपुर, अपनी विशेष पेशकश के साथ शहर के हॉस्पिटैलिटी लैंडस्केप को बदलने के लिए तैयार है। ये विशेष पेशकश इस स्थान को यात्रियों एवं आयोजनों के लिए एक आदर्श डेस्टिनेशन बनाती हैं। इस लक्जरी प्रॉपर्टी में विविध प्रकार की मीटिंग्स, बैंकवेट्स व अन्य आयोजन करने का पूरा इंतज़ाम है। इसमें शानदार पिलर लेस (खम्बेरहित) सम्मेलन रूम, आलीशान प्रीफंक्शन एरिया तथा विशाल लॉन शामिल है। पद्मिनी बाग रिसॉर्ट इनवेनट्रीज़ उदयपुर मीटिंग्स, इंसेंटिव्स, विवाह, कॉन्फ्रेंस व एक्जीबिशन के लिए एकदम उपयुक्त स्थान है।

सुदीप्ता देव ने बताया कि हमारे लक्जरी होटल्स सेगमेंट में स्पाइस कोर्ट शाकाहारी रेस्टोरेंट के शामिल होने से, इनवेनट्रीज़ होटल्स के लक्जरी पोर्टफोलियो को और मजबूती मिली है। उदयपुर संस्कृति और परम्पराओं से समृद्ध एक शहर है और यहां कविताओं, साहित्य, चित्रकला, मूर्तिकला व थियेटर को उत्साह से सेलिब्रेट किया जाता है।

डॉ. पृथ्वीराज चौहान ने बताया कि होटल्स के साथ आतिथ्य के इस क्षेत्र में विशेषज्ञता रखने व इस लैंडमार्क प्रोडक्ट (विशिष्ट उत्पाद) यानी स्पाइस कोर्ट रेस्टोरेंट पद्मिनी बाग रिसॉर्ट उदयपुर की सेवाएं प्रदान करने का हमारा सशक्त और उत्कृष्ट तरीका, मिलकर उदयपुर में पर्यटन की संभावनाओं को और बढ़ाएगा।

टाटा मोटर्स के पिकअप की नई रेंज लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। भारत में कमर्शल वाहनों के सबसे बड़े निर्माता टाटा मोटर्स ने ऑल-न्यू इंट्रा वी70, इंट्रा वी20 गोल्ड और ऐस एचटी+ को लॉन्च किया है। कंपनी ने माल या सामान को प्रभावी ढंग से एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाने की प्रतिबद्धता के साथ यह गाड़ियां पेश की हैं। इन नए वाहनों को भारी सामान कम लागत में लंबी दूरी तक पहुंचाने के लिए डिजाइन किया गया है। इन वाहनों में अपनी श्रेणी के बेहतरीन फीचर्स हैं। इन गाड़ियों का प्रयोग कई कामों के लिए किया जाता है। यह शहरों और गांवों में ट्रांसपोर्टर्स को बेहतर मुनाफा और उत्पादकता मुहैया कराती है। टाटा मोटर्स ने लोकप्रिय इंट्रा वी50 और ऐस डीजल व्हीकल्स का नया वर्जन लॉन्च किया। इसे स्वामित्व की कम लागत के साथ ईंधन की कम खपत करने के लिए फिर से बनाया गया है। नई गाड़ियों के लॉन्च के साथ टाटा मोटर्स ने नए कमर्शल वाहन और पिकअप की बड़ी रेंज पेश की है। इससे उपभोक्ता अपनी जरूरतों के हिसाब से आदर्श वाहन पसंद कर सकते हैं। अब देश भर में इन वाहनों की बुकिंग टाटा मोटर्स सीवी डीलरशिप पर खुल गई है।

टाटा मोटर्स के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर गिरीश वाघ ने कहा कि तरह-तरह का सामान इधर से उधर ले जाने के लिए ये वाहन आदर्श समाधान मुहैया कराते हैं। हमारे छोटे कमर्शल वाहन और पिकअप उपभोक्ताओं को उनकी कमाई का साधन मुहैया कराते हैं। इन वाहनों को अपने उपभोक्ताओं की जिंदगी को बेहतर बनाने के लिए जाना जाता है।

एचडीएफसी बैंक का स्टार-स्टडेड पेज़ैप अभियान लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के अग्रणी निजी क्षेत्र के बैंक, एचडीएफसी बैंक ने आज सितारों से सुसज्जित पेज़ैप अभियान शुरू करने की घोषणा की। इस अभियान में अभिनेता टाइगर श्रॉफ, प्रभु देवा और कपिल शर्मा व्यापक उपभोक्ता जुड़ाव के लिए अपनी अपार लोकप्रियता का उपयोग कर रहे हैं।

एक मार्टेक नेटवर्क, वंडरलैब इंडिया द्वारा परिकल्पित टंग-इन-चिक अभियान में तीन अभिनेताओं की विशेषता वाली तीन फिल्में शामिल हैं, जिनमें से प्रत्येक पेज़ैप द्वारा प्रदान किए जाने वाले भुगतान विकल्पों की एक श्रृंखला को प्रदर्शित करती है। यह अभियान इस अंतर्दृष्टि से आया है कि कुछ लोग अपना पूरा जीवन बिना किसी विकल्प के जीते हैं, लेकिन अब उन्हें ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है, कम से कम जब भुगतान की बात आती है।

ग्रुप हेड, चीफ मार्केटिंग ऑफिसर और हेड-डायरेक्ट टू कंज्यूमर बिजनेस रवि संथानम ने कहा कि पेज़ैप के साथ, हमने सभी उपभोक्ताओं के लिए भुगतान अनुभव को बड़े पैमाने पर नया रूप दिया है, जिससे यात्रा सुगम और आसान हो गई है - चाहे वह यूपीआई, कार्ड या पेज़ैप वॉलेट के माध्यम से हो। यह सिर्फ एक पेमेंट ऐप नहीं है; यह जीवनशैली को सक्षम बनाने वाला है। हम उपभोक्ताओं के लिए पेमेंट ऐप की पसंदीदा पसंद बनने का लक्ष्य रखते हुए देश के हर हिस्से तक पहुंचना चाहते हैं। पेज़ैप पर तीन फिल्मों ने हमारे ब्रांड संदेश के सार को खूबसूरती से दर्शाया है। वंडरलैब इंडिया के सीसीओ और सह-संस्थापक अमित अकाली ने कहा कि अभियान की संकल्पना करते समय हमने एक विरोधाभासी दृष्टिकोण अपनाया। हमने पता लगाया कि हम दर्शकों को यह दिखाकर असीमित विकल्पों के मुद्दे को कैसे आगे बढ़ा सकते हैं कि जब उनके पास जीवन में कोई विकल्प नहीं होता तो क्या होता है। इसीलिए, हम उन मशहूर हस्तियों को चुनते हैं जो किसी चीज़ के लिए सबसे ज्यादा जाने जाते हैं।

पशु रक्षार्थ मंत्रित.....

(पृष्ठ एक का शेष)

लोग मंत्रों से अभिमंत्रित यह दिव्य जल करवणी विविध पात्रों में भरकर अपने घर ले जाकर खेतों, सब्जियों के बाड़ों-बाड़ियों, पशुओं के रहने के स्थलों आदि में छिड़काव कर देते हैं। इस टोटके से गांव के पशुओं की स्वास्थ्य रक्षा के साथ सम्पन्नता की वृद्धि होती है।

इस टोटके के साथ खजूर की पत्तियों, डालियों तथा रेशों की रस्सी से छोटी सी गाड़ी बनाई जाती है। इस पर लाल कपड़े से ढका श्रीफल रख मिट्टी का घड़ा स्थापित किया जाता है जिसे सिन्दूर, कुम्कुम, टीली-फून्दी आदि से सजाया जाता है। लाल व हरे रंग की दो ध्वजाएं इस पर लगाई जाती हैं। गांव का भोपा परम्परागत मंत्रों के साथ इसकी पूजा करता है। सात आदमी इसे लेकर गांव के चारों तरफ घुमाते हैं तदनन्तर बेडियू (रथ) को गांव की सीमा से बाहर जाकर रख आते हैं। लौटते समय तनिक भी पीछे मुड़कर नहीं देखते।

बचपन के.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

लाख के खिलौने :

लाख के तरह-तरह के खिलौने बनाने वाली जाति लखारा नाम से जानी जाती है। लखारे लाख को तपाकर विविध रंगों के बड़े ही आकर्षक खिलौने बनाने में दक्ष होते हैं। इन खिलौनों में तरह-तरह की गुड़िया, हाथी, घोड़ा, शेर, चीता, हिरण जैसे पशु: मोर, चिड़िया जैसे पक्षी: मगरमच्छ, मछली जैसे जलजीवों के खिलौने बच्चों में बड़े लोकप्रिय रहे हैं। प्लास्टिक और रबर आ जाने से अब वे खिलौने ही अधिक बिकते नजर आते हैं। इससे लाख के खिलौने बनने बंद हो गये हैं। जंगलों के उजड़ जाने से पहले वृक्षों से जो लाख प्राप्त होती थी, वह अब दूभर हो गई है, इसलिये लाख का काम करने वाले लखारों को अपने इस परम्परागत व्यवसाय से ही हाथ धोना पड़ा है।

पहले लड़कियाँ लाख के बने पछेटों से खेलती थी। अब वे पछेटे भी देखने को नहीं मिलते। करंगस, हप्पे, कूंगसे, कोड़ियाँ आदि भी अब लड़कियों के हाथों में दिखाई नहीं देते। और तो और वैसे सफेद कांकरे (कंकड़) भी सुलभ नहीं होते हैं, जिनसे लड़कियाँ नानाप्रकार के खेल खेलकर आनंदमग्न हो सकें।

मुखौटा खिलौने :

अपने मुँह पर आवरण के रूप में जो दूसरा मुँह चढ़ाया जाता है वह 'चेहरा' अथवा 'मुखौटा' है। मुखौटों के रूप में चेहरा लगाना असली चेहरे पर नकली चेहरे का आवरण है।

ये चेहरे कई प्रकार के होते हैं, जिन्हें बच्चे मुँह पर बाँध कर कूदा फाँदी करते रहते हैं। इन चेहरों में देवी-देवता, पशु-पक्षी, राक्षस आदि के चेहरे बच्चों में बहुत लोकप्रिय हैं। पतंग भी बच्चों का एक अच्छा खिलौना है। छोटे-छोटे बच्चे जब पतंग उड़ाना सीखते हैं, तब अपनी कॉपी में से ही कोई पन्ना फाड़ लेते हैं और उसी की पतंग बनाने में खो जाते हैं। इसके लिये उसके एक किनारे पर कोई सा धागा बाँध देते हैं, जबकि उसके नीचे वाले किनारे पर फटे पुराने कपड़े की कोई लीरी गोंद या गूंदे के रस से चिपका देते हैं। बीच में पतंग को मजबूती देने और धागे की पकड़ के लिये मोटे झाड़ू की सींक लगा देते हैं। दो चार फीट का पतंग का धागा अपनी मुट्ठी में पकड़े बच्चे सड़क पर अपने ऊँचे किये हाथ में पतंग लिये दौड़ते रहते हैं। जब हवा चलती है, तब यह पतंग बच्चों के इर्द-गिर्द ही ऊपर की ओर उड़ता चलता है।

घासफूस के खिलौने :

घासफूस के खिलौनों में खोइये के, मकई-गेहूं के डंठल के, बीजों और पत्तों के खिलौने मुख्य हैं। खोइये से तात्पर्य

खजूर के पत्तों से है। खजूर के पत्तों से झाड़ू और पंखे बनाना तो आम बात है, किन्तु बच्चों के खिलौनों के रूप में पशु-पक्षी तथा मानव आकृतियाँ भी बड़ी आकर्षक रूप में बनती रही हैं। इनमें हाथी, घोड़ा, शेर, मोर, हिरण, आदमी, चिड़िया आदि की आकृतियाँ सहज ही सबका मन मोह लेती हैं। बच्चे इन खिलौनों को बड़े यत्नपूर्वक सहेज कर रखते हैं। ये खिलौने बहुत हल्के होते हैं और आसानी से इधर-उधर ले जाये जा सकते हैं।

सरकंडे से तात्पर्य मकई के डंठल, जिन्हें 'राड़ा' भी कहते हैं-से है। लगभग डेढ़ फीट की लम्बाई लिये नौ सरकंडे लिये जाते हैं। इनमें तीन जोड़े सरकंडों का एक-एक जोड़ा बनकर, उनमें तीन सरकंडे लगाकर जोड़ दिये जाते हैं। पतले लोहे के तार से वे ढीले-ढाले रूप में जोड़े जाते हैं।

इसमें पहले वाली जोड़ के एक सिरे पर कागज का साँप का मुँह बनाकर लगा दिया जाता है और उसके ऊपर (सिरे भाग पर) चिड़िया का रंगीन पंख चिपका दिया जाता है। इसी जोड़ के नीचे तथा बीच में एक-एक सरकंडा लोहे की पतली कील से जोड़ दिया जाता है। इसमें बीच वाली जोड़ में तीन सरकंडे संयुक्त रहते हैं, जिसमें साँप वाली प्रथम जोड़ वाले सिरे का आखिरी भाग बीच के सरकंडे का मध्य भाग तथा नीचे वाले सरकंडे का प्रारंभिक सिरा होता है। अंतिम जोड़ वाले सरकंडे में दो ही जोड़ने वाले सरकंडे रहते हैं।

अंतिम जोड़ को हिलाने से सारे सरकंडे आगे-पीछे हिलते झूमते रहेंगे, जिससे लगेगा कि साँप कभी आगे बढ़ रहा है तो कभी पीछे सिकुड़ रहा है। इसे पूरा लम्बा करने पर यह चार फीट तक फैल जाता है। नौ ही सरकंडे नीचे-ऊपर से आसमानी, लाल रंग से रंग दिये जाते हैं। बच्चे जहाँ कहीं घूमते, इधर-उधर जाते समय सरकंडे को अचानक फैलाकर अन्य बच्चों को डराते रहते हैं। मेलो ठेलों में इनकी अच्छी खासी बिक्री होती है। इन्हें बनाने की कला कारीगरी ही महत्त्वपूर्ण है। इसके बनाने में खर्च तो नहीं के बराबर ही बैठता है।

आदिवासी बालक अधिकतर छितरे हुए घरों में रहते हैं। ये घर कहीं पहाड़ी पर, कहीं टेकरी पर, कहीं ऊँचे मंगरे-मंगरी पर तो कहीं मैदानी भाग में होते हैं। समूह रूप में इनकी बस्ती कम नहीं होने के कारण आदिवासी बालको में सामूहिक खेल तथा तद्जनित खिलौनों का अभाव पाया जाता है। आदिवासी चूंकि अच्छे शिकारी होते हैं, इसलिये उनके बच्चे भी बचपन से ही इस कला में दक्ष किये जाते हैं। शिकार प्राय: तीर से किया जाता है। यह तीर धनुषाकार कमान पर चढ़ाकर साधा जाता है। आदिवासी बच्चों के ये तीर छोटे-छोटे होते हैं, जो हरियाँ नाम की डंडी से बनाये जाते हैं। इसी डंडी से मुड्डे आदि बनते हैं। तीरगर जाति के लोग हरिया की खेती करते हैं। इनकी नोक लुहार बनाते हैं। गिद्ध और मोर के पंखों से इन तीरों को सजाया जाता है। पंख आदिवासी स्वयं ले आते हैं। **- समाप्त**

उदयपुर में दूसरे ऐप्पल स्टोर का शुभारंभ

उदयपुर (ह. सं.)। देश के सबसे अधिक ग्राहकों वाले ऐप्पल पार्टनर स्टोर इमेजिन ट्रेज़र ने अपने दूसरे एक्सपिरेशियल एप्पल स्टोर को अशोक नगर, महावीर

कॉलोनी, उदयपुर में लॉन्च किया है। स्टोर का उद्घाटन मेवाड़ राजपरिवार के लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने किया। इस अवसर पर ट्रेज़र परिवार के विभिन्न गणमान्य व्यक्ति और टीम के सभी वरिष्ठ सदस्य उपस्थित थे।

शुभारंभ मौके पर लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने कहा कि उदयपुर में दूसरे इमेजिन एप्पल स्टोर का शुभारंभ, शहर में विकास का प्रमाण है। त्यौहारी सीज़न के साथ, यह उदयपुर के लोगों के लिए नए उत्पादों का पता लगाने का एक शानदार अवसर है। उन्होंने कहा कि आधुनिक मोबाइल उदयपुर में आसानी से उपलब्ध होगा और यह भी खुशी है कि यहां दो स्टोर एप्पल के हो गए है। मेवाड़ ने कहा कि उनके पिता अरविंदसिंह मेवाड़ का नई तकनीक को लेकर पहला कदम हमारे घर में आगे रहता है।

ट्रेज़र ग्रुप के संस्थापक और प्रबंध निदेशक शौर्य सेठ ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि हमें राजस्थान में श्रृंखला में बारहवां स्टोर जोड़कर गर्व है। उदयपुर हमारे लिए महत्वपूर्ण है और कंपनी के समग्र विकास में अभिन्न भूमिका निभाएगा। हम भविष्य में और अधिक स्टोर लॉन्च के साथ विस्तार करने को लेकर आशान्वित हैं जो हमारे ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करना जारी रखेगा और अनुभव को नए आयाम देगा।

ट्रेज़र सिस्टम्स प्रा. लि. के ग्रुप हेड मार्केटिंग और सीएसआर डॉ. श्रवण कोकरू ने कहा कि इमेजिन ऐप्पल उत्पादों की विस्तृत श्रृंखला और ब्रांडेड एक्सेसरीज की रेंज प्रदान करता है। ग्राहकों को अधिक से अधिक उत्पाद रेंज उपलब्ध कराने में यह स्टोर सहायक होगा। इसमें मैकबुक स्लीव या आईपैड केस, नवीनतम मैक या म्यूजिक एक्सेसरीज हों, स्टोर में मैक, आईपैड और आईफोन के लिए एक्सेसरीज की विशाल श्रृंखला उपलब्ध है। स्टोर में ऐप्पल के डेस्कटॉप कंप्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल की पूरी श्रृंखला एवं आईफोन, आईपेड, एयर पोड, ऐप्पल वॉच और बीट्स उपलब्ध होंगे।

जीएम प्रोजेक्ट्स मनोज पालीवाल ने कहा कि हम अशोक नगर में अपने नए स्टोर के लॉन्च को लेकर उत्साहित हैं और हमें अच्छे प्रत्युत्तर की उम्मीद है, क्योंकि लॉन्च के लिए ग्राहकों में उत्सुकता है। एक ही छत के नीचे सभी उत्पादों की पूरी श्रृंखला के साथ, हम बेहतर ग्राहक सहायता और बिक्री के बाद सेवा प्रदान करने का प्रयास करते हैं।

ट्रेज़र के राजस्थान क्लस्टर हेड, नीरज मेहरा ने कहा कि नए लॉन्च किए गए स्टोर के साथ, इमेजिन ट्रेज़र ने राजस्थान में अपना बारहवां और देश में 40वां अधिकृत ऐप्पल स्टोर का शुभारंभ किया है। स्टोर भूतल पर स्थित है और इसमें ऐप्पल उत्पादों और उपयुक्त इको सिस्टम उत्पादों की पूरी श्रृंखला है। ग्राहक 18 दिसंबर तक सभी ऐप्पल उत्पादों पर 20 प्रतिशत और एक्सेसरीज पर 30 प्रतिशत तक की छूट का लाभ उठा सकते हैं।

तीन कहकहे

(1)

पांच साल पकता रहा, वोटरजी का आम।
एकबार में होगया, उसका काम तमाम।।
उसका काम तमाम, कोई जीते या हारे।
गुड़ धनिया भी नहीं, नसीब वोटर बेचारे।।
जीतू तो भगवान बन गया, हारू बना पुजारी।
जनता सोई पांच वर्ष से, जागेगी बेचारी।।

(2)

शोक मग्न अशोकजी, हुए हाल बेहाल।
कांव-कांव में रह गई, कांगरेस की चाल।।
कांगरेस की चाल, सूपड़ा साफ होगया।
खींचतान में पासा पलटा, खाक होगया।।
इतने में आ गया छछूंदर, बोला सुनो सुनाऊं।
मतदाता वो नहीं, पकड़ में जिसको चाहूं लाऊं।।

(3)

ठंडी-ठंडी ओढ़ रजाई सुबक रहे सूरज दादा।
हम सब कांप रहे धरती पर भूल गये अपना वादा।।
ओढ़े वृक्ष खड़ा है बुरका पहने ठिठुरी ठंडी लता।
मंदिर में देवता ठिठुरते भक्तों का नहीं अता पता।।
ठंडी हवा अलाप तापती कांप रही जलती भट्टी।
पाट से पाट मिलाकर के भी धूज रही घर की घट्टी।।

सर्वाधिक शुद्ध पानी अधरगंगा का

काशी में गंगाघाट पर सुबह-सुबह कबीर पहुंचे। वहां उन्होंने देखा कि दुर्गादत्त नामक एक पंडित नहाने के बाद किसी ओछी जात वाले से छू गया तो पुन: नदी में नहाने गया। ऐसा उसने तीन बार किया। कबीर ने खड़े-खड़े यह तमाशा देख दुर्गादत्त से पूछा, कौनसा पानी शुद्ध है? जिस पानी से नहाकर तुम शुद्ध हुए हो वह भी तो अशुद्ध है। उसे भी मछलियां जच्चा बन गंदा बना देती हैं।

दुर्गादत्त यह सुन सकपका गया। वह सोच में पड़ गया। उन्हीं दिनों मीरांबाई भ्रमण करती काशी पहुंची। दुर्गादत्त को पता चला तो वह मीरांबाई के पास पहुंचा और पूछा कि सर्वाधिक शुद्ध पानी किसका होता है। मीरांबाई ने जवाब दिया- 'सबसे शुद्ध पानी तो नारियल का होता है। वह न तो धरती का होता है और न आसमान का। दोनों के बीच का होता है। यह पानी 792 पड़दों में रहता है। यह गंगा से भी अधिक शुद्ध होता है। इसलिए नारियल को अधरगंगा भी कहते हैं।'

यह कह मीरांबाई ने पं. दुर्गादत्त को सुझाव दिया कि इस बारे में कबीर से पूछ लेना। यह सुन दुर्गादत्त कबीर मठ में कबीरदासजी से मिला और यह घटना सुनाई तब कबीर ने मीरांबाई को अपने मठ पर मेहमान बनाया। दुर्गादत्त की शंका दूर हुई।

ठाकुर अमरचन्द बड़वा की छतरी और शिलालेख मिला

डॉ. राजेन्द्रनाथ पुरोहित और डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' की खोज

अमर यानी देवता। सुर। असुरों पर विजय का निशान गाड़ने वाला, अमृत से सिंचित अमरचन्द । सचमुच उसमें अपने नाम की सार्थकता की तासीर थी। मेवाड़ के लिए वह अमर ही बनकर आया। जन-जन की आशाओं और उम्मीदों का केंद्र अमरचन्द।

उत्तर मध्य काल में चारों ओर से आक्रमण और आंतरिक कलहों से मेवाड़ को निजात दिलाने वाले प्रधानमंत्री ठाकुर अमरचन्द बड़वा का निधन संवत् 1836 (सन 1779 ईस्वी) में हुआ था। इसकी पुष्टि करने वाला शिलालेख मिल गया है। हालांकि यह अधिक पुराना नहीं, लेकिन अधिकृत दस्तावेज के आधार पर यहां की अन्य छतरियों के शिलालेखों की तरह ही लगाया गया है। छतरी पर बड़वा के वंशज आज तक पूजा अर्चना करते हैं।

वरिष्ठ इतिहासकार डॉ. राजेंद्रनाथ पुरोहित और डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' ने महासतियों की छतरियों में खोजबीन करते हुए गत दिनों इस शिलालेख को खोज निकाला और ठाकुर अमरचन्द बड़वा के निधन को लेकर असमंजस की स्थिति को विराम लगा दिया। महासतियां में ठाकुर अमरचन्द बड़वा की छतरी भी बनी है और यह गंगू कुण्ड के पूर्व तथा महाराणा अमरसिंह की छतरी के पश्चिम में है। छतरी चार स्तंभों वाली है जिसमें उत्तरकालीन स्थापत्य शैली के खम्भे संगमरमर से बने हैं जबकि चौकी और आधार में धार वडिंगा के पाषाण का उपयोग हुआ है। इस छतरी के नीचे एक संक्षिप्त शिलालेख पर अंकित है -

पूर्बिया सनाढ्य
प्रधानमंत्री
ठाकुर अमरचंद बड़वा
उदयपुर मेवाड़
संवत् 1836

डॉ. पुरोहित और डॉ. जुगनू का मानना है कि इस स्थल पर परिचयमूलक पट्ट-अभिलेख के मिल जाने से ठाकुर अमरचन्द की मृत्यु का वर्ष ज्ञात हो गया है। इन दिनों उन पर स्मृति ग्रंथ का प्रकाशन अंतिम चरण में है। यह अभिलेख मिलने से अनेक संशयों का निराकरण हो जायेगा।

इस अभिलेख के मिलने से यह उजागर हुआ है कि विक्रम संवत् 1831 में पद त्यागने के बाद भी पांच साल तक बड़वा जीवित थे लेकिन, प्रशासन में बड़ारन रामप्यारी बाई के मजबूत दखल के कारण वे संन्यासी जैसे रहे या धीमे विष के प्रभाव में। जेम्स टॉड ने उनकी वीरता और विष देने के प्रसंग को उदारता से लिखा है।

अपनी खास मर्यादाओं के लिए ख्यात मेवाड़ रियासत 1734-78 ईस्वी के दौरान घोर संकट के दौर से गुजरी। इस दौर के हालात अकबर के हमलों से कहीं ज्यादा भयावह थे। देश के विभिन्न इलाकों में उभरने वाली ताकतों ने मेवाड़ को दौलत के खज़ाने की हैसियत से लपलपाती जबान और ललचाई निगाहों से देखा ही नहीं, बल्कि इसके गौरवशाली अतीत और मर्यादाओं के चीर के हरण के लिए मनसा-वाचा-कर्मणा कोशिशें की।

चढ़ाई, हमले, घेराबंदी और मनमाने प्रस्ताव भेजकर मेवाड़ को पाताल तक खोखला कर देने के षडयंत्र रचे गए। तब सामंत भी कम जिम्मेदार नहीं थे। इन हमलों से महाराणा ही नहीं, आम जनता तक के नाक में दम हो रहा था। शासकों को न केवल सत्ताच्युत करने के षडयंत्र रचे जा रहे थे बल्कि वंशज ही वंशज का दुश्मन बना हुआ था। थाली के निवालों पर तक संदेह और सवाल खड़े हो गए थे। महाराणा जगतसिंह, महाराणा प्रताप, महाराणा राजसिंह, महाराणा अरिसिंह और महाराणा हमीर (सभी शासक द्वितीय) के शासनकाल में ऐसे घात-प्रतिघातों के एक नहीं, अनेकानेक उदाहरण मिलते हैं। इनमें भी उपद्रवों और सैनिक विद्रोहों ने बारुद में बत्ती का काम ही ज्यादा किया। बात-बात में विषपान जैसे वाकयात सामने आते थे और बार-बार मेवाड़ के रोंगटे खड़े हो जाते थे।

ऐसे विषम हालातों से निजात दिलाने और मेवाड़ का गौरव लौटाने के लिए जिस व्यक्तित्व की ओर सबकी निगाहें थी, वह था - अमरचन्द बड़वा। अमर यानी देवता। सुर। असुरों पर विजय का निशान गाड़ने वाला, अमृत से सिंचित अमरचन्द । सचमुच उसमें अपने नाम की सार्थकता की तासीर थी। मेवाड़ के लिए वह अमर ही बनकर आया। जन-जन की आशाओं और उम्मीदों का केंद्र अमरचन्द। कर्नल जेम्स टॉड ने उसके कहे जिन शब्दों को लिखा है, सचमुच उनको पढ़कर मेवाड़ के चार महाराणाओं के इस प्रधानमंत्री के प्रति जय-जयकार करने का मन होता है। अच्छा हुआ जो टॉड ने उसके व्यक्तित्व को चिरायु कर दिया, वरना मेवाड़ का यह महानायक काल के गाल में समा जाता क्योंकि इस स्वामीभक्त और स्वाभिमानी नायक की न केवल हत्या की गई, बल्कि मेवाड़ में स्वामीभक्ति की ही हत्या कर दी गई थी।

टॉड का कथन काबिले गौर है - एक आदमी जो जिस तरह जिया और जिस तरह मरा, वह सबसे ज्यादा सभ्य कहलाने वाले मुल्क के लिए अभिनंदन का विषय हो सकता था। उसने अपने सिद्धांतों पर जमा-जमाकर कदम रखे और इसी वजह से उसको जन-जन का हृदय से सम्मान प्राप्त हुआ। जो लोग यह मानते हैं कि इन रियासतों में जनता की बात का महत्व नहीं, वे लोग बहुत बड़ी गलतफहमी में हैं। अमरचन्द के जीवन चरित को आज भी बड़ी निष्ठा से सुना-सुनाया जाता है। जाहिर है, हालांकि इस मुल्क में बेहतर गुणों का अनुकरण करने वाले लोग गिने-चुने मिलेंगे, मगर उनकी बेपनाह तारीफ करने वालों की संख्या में कभी नहीं है।

(एनाल्स एंड एंटीक्विटीज आव राजस्थान-टॉड, प्रथम भाग)

अमरचंद प्रधान जैसे पद के लिए चाणक्य, कामंदक, शुक्राचार्य आदि की बताई योग्यताओं, अर्हताओं पर पूरी तरह खरा उतरा। वह देशोत्पन्न, कुलीन, अवगुण शून्य, निपुण सवार, ललित कलाओं का ज्ञाता व रुचिशील, अर्थशास्त्र का विद्वान, बुद्धिमान, स्मरण शक्ति संपन्न, चतुर, वाकपटु, दबंग, प्रतिवाद व प्रतिकार करने में समर्थ, उत?साही, प्रभावशाली, सहिष्णु, पवित्र, मित्रता के योग्य, दृढ़विचार, स्वामिभक्त, सुशील, समर्थ, स्वस्थ, धैर्यवान, निरभिमानी, स्थिर प्रकृति, प्रियदर्शी और द्वेषवृत्ति रहित था। ये ही विशेषताएं नीतिशास्त्रों में मिलती हैं।

किंतु, एक घमंडी दासी ने विधवा महारानी के कान क्या भरे। महारानी अमरचन्द की विरोधी हो गई और उसको स्वार्थी कह दिया। अमरचन्द ने अपने घर लौटकर सारा सामान, कमाई का कुल जमा धन, यहां तक कि अपने पहनने के कपड़े तक महारानी को लौटा दिए...। षडयंत्रों के दौर में जहर ने उसे जब लील लिया, उसके घर से कफन तक नहीं निकला। जनता के चंदे से उसका अंतिम संस्कार हुआ...। उसके जीवन के सारे आदर्श आज भी प्रासंगिक हैं।

डॉ. पुरोहित तथा डॉ. जुगनू

गुजरात का भीली रसोत्सव गोर

-डॉ. भगवानदास पटेल-

गुजरात के डूंगरी भीलों द्वारा प्रदर्शित अनुरंजन उनके जीवन की कोई-न-कोई धार्मिक या सामाजिक प्रणाली को क्रियाशील बनाते हैं। सामाजिक प्रसंग के खास प्रकार के वातावरण के प्रभाव तले वाचिक-कायिक अभिनय द्वारा दर्शकों के सहयोग से कलामय स्वरूप धारण करते हैं। इस दृष्टि से 'गोर' के धार्मिक अवसर पर खेले जाते परम्परागत अथवा वेहों (वेशों) का अध्ययन महत्त्वपूर्ण है।

गोर अथवा गणगौर गुजरात के खेड़ब्रह्मा और दांता तहसील के भीलों का प्रमुख धार्मिक महोत्सव है। इसे सात-आठ गांव के लोग इकट्ठे होकर मनाते हैं। यह उत्सव वैशाख शुक्ल पक्ष एकम से पूर्णिमा तक पूरे पन्द्रह दिन चलता है। इसका सम्बन्ध उमिया अर्थात् पार्वती तथा शिव के साथ जोड़ा जाता है।

वैशाख शुक्ल एकम की शाम गोर के परम्परागत पुजारी और गांव के अगुआ गोर को जगाने की धार्मिक विधि कर मूसल की स्थापना करते हैं। मूसल शिवलिंग का प्रतीक होता है। प्रात:काल समाज द्वारा नियुक्त पांच कन्या और पांच कुमार जंगली पुष्पों से मूसलरूपी शिवलिंग की पूजा करते हैं। रात्रि में गीत, संगीत और नृत्य मिश्रित वेह खेले जाते हैं।

वैशाख शुक्ल चौदस के दिन गोर के पुजारी और गांव के अगुआ गोर और इसबोरजी, ईसरजी यानी शिव की रचना करते हैं। धतूरे-आक जैसे बनफूलों और आभूषणों से उनको सजाते हैं और महुए के पानी से बनाई गई भरोरां नाम की मिठाई और श्रीफल से पूजा-अर्चना करते हैं। उस समय लोग गोर और शिव की महिमा के गीत गाते हैं और नृत्य करते हैं।

पूर्णिमा के दिन गोर का मेला लगता है। इसमें बेशुमार लोग इकट्ठे होते हैं। गोर को नचाने के लिए गीत गाये जाते हैं और सारा लोकसमुदाय विविध नृत्यों के साथ थिरकने लगता है। सबसे आगे गुणका, गणपति होता है जो अपने मुख पर विविधरंगी मुखौटा लगाये विशिष्ट रूप से नाचता है। सारा दिन लोकवाद्यों की धुनों पर गीत और नृत्य के साथ लोकसमूह रसनिमग्न रहता है। शाम को जलाशय में गोर का विसर्जन करने के साथ पन्द्रह दिन चला यह रसोत्सव समाप्त होता है।

गोर पूरे प्रदेश के लोग और पालतू प्राणियों के सुख के लिए सामूहिक रूप में ली जाती है। गौरी और शिव जैसे खैखे देवी-देवता पर पूरे प्रदेश के लोगों की गहरी आस्था होने से उनकी कृपा की वारिद वर्षा पूरे प्रदेश के लोगों पर बरसे, अत: फसल अच्छी पके तथा भूकम्प और बवण्डर जैसे घातक प्राकृतिक तत्वों के प्रभाव से रक्षा हो इसलिए भी गोर और इरबारजी, शिव की सामूहिक रूप में पूजा-अर्चना-उपासना की जाती है। उनको रिझाने के लिए और उस समय इकट्ठे लोगों के अनुरंजन के लिए पूरे चौदह दिन तक वेह खेले जाते हैं।

वेह या नाटक दो प्रकार के होते हैं। एक धार्मिक और दूसरा सामाजिक। वेहों में धार्मिक वेह स्थापित देवी-देवता को खुश करने के लिए और सामाजिक वेह सामयिक घटनाओं से लोगों को अवगत कराके उनके मनोरंजन हेतु खेले जाते हैं। रात्रि के समय खेले जाने वाले वेहों में (1) ठाकुर के घोड़े (2) रखी, ऋषि-रक्षक (3) तारादे (4) झरखुं (5) गोपी (6) भेड़-बकरियां चराने वाला (7) बाघ (8) हाथी (9) घड़ियाल (10) मुमरदु मुख्य हैं।

ठाकुर के घोड़े, रखी, ऋषि और तारादे के वेह भीलों की धार्मिक आस्था प्रकट करते हैं। झरखुं, मुमरदु, गोपी आदि वेह उनके दैनिक सामाजिक जीवन के प्रतिबिंब जैसे होते हैं। डायन, काथौड़ी आदिवासी जैसे वेह उनकी आदिम धार्मिक श्रद्धा और सम्भोगादि में प्रकृत रस का सूचन करते हैं। बाघ, हाथी, घड़ियाल जैसे वेह भील आदिवासियों के प्रागैतिहासिक युग से चले आये विशाल वन्य प्रकृति के साथ अभिन्न सम्बन्ध को सूचित करते हैं।

सभी वेह पुरुष ही खेलते हैं। स्त्री पात्रों का स्वांग भी पुरुष ही लेते हैं। वेह खेलते पुरुष उत्सव की समाप्ति तक मांस, मदिरा का त्याग करते हैं। पहले वर्ष जो पुरुष जो वेह या पात्र लेता है उसको ही दूसरे वर्ष भी वही वेह या पात्र लेना पड़ता है। दूसरे वर्ष वह प्रदर्शक यदि अपना वेह या पात्र नहीं खेले तो उस पर गोर का प्रकोप उतरता है और वह बीमार पड़ता है। ऐसी पूरे समाज की उनकी सामाजिक मान्यता है। पात्रों की रूप-सज्जा चारोंओर फैली प्राकृतिक वस्तुएं और टूटी-फूटी घरेलू चीजों में से की जाती है।

वेहों के लिए गांव का कोई खेत-खलिहान या पहाड़ की कोई समतल तलहटी का प्रांगण रंगमंच बन जाता है। चारोंओर फैली शिलाओं और वृक्षों की टहनियां दर्शकों की बैठक बन जाती हैं। किसी बड़ी शिला के पीछे प्रदर्शक वेश सजते और बदलते हैं। आरम्भ में आबाल वृद्ध, स्त्री-पुरुष सभी सम्मिलित होकर गोर के गीत गाते हैं और जानविया ढोल के साथ नृत्य करते हैं। एक विशेष वातावरण सर्जित हो जाने के बाद वेह खेलने शुरू होते हैं।

वेश निकालते और नाटक खेलते समय ढोल, मृदंग, कुंडी जैसे चर्मवाद्यों और बांसुरी, शंख आदि सुषिरवाद्यों का प्रयोग होता है। प्रत्येक वेश या नाटक ढोल या मृदंग के संगीत के साथ प्रारम्भ हो नृत्यों के साथ बदल जाता है। इसलिए रंगमंच पर पट परिवर्तन की आवश्यकता नहीं होती।

धार्मिक वेहों पर पूरे समाज के लोगों की प्रगाढ़ आस्था होने से दर्शक धार्मिक अदब का पालन करते हैं और प्रदर्शक अत्यन्त गम्भीरता के साथ नाट्य खेलते हैं। जब सामाजिक वेहों का उद्देश्य समाज में घटित विशेष घटनाओं से लोगों को जानकारी देने के साथ-साथ लोकानुरंजन होने से प्रदर्शक उन्मुक्त रूप से हर्षोल्लास के साथ खेलते हैं। अत: अभिजात वर्ग को नग्न और अश्लील लगने वाले वेह भी यहां इतनी सहजता के साथ खेले जाते हैं कि ये वेह लोकानन्द के प्रमुख अंश बन जाते हैं और श्लील-अश्लील के किनारे लांघ जाते हैं।

डूंगरी भील आदिवासियों के ये वेह दर्शकों के मानस में बीज में से अंकुरित और पल्लवित होकर विकसित नहीं होते। परम्परागत होने से ये वेह दर्शकों के चित्त में पहले से ही स्थित होते हैं। फिर भी दर्शक लोग देवी-देवताओं की ओर पूज्यभाव, प्रदर्शकों की अभिनयकला और लोकनाटकों की मंचन प्रक्रिया से आकर्षित होकर आते हैं।

प्रागैतिहासिक युग में निषाद प्रजा बसती थी जो भारतीय संस्कृति की जन्मदात्री कही जाती है। ख्यात पुरावास्तुविद् डी. डी. कोसाम्बी निषाद को ही भील मानते हैं। भारतीय सभ्यता के विकास में इन आदि-भील लोगों का अनन्य योगदान रहा है। उन्होंने ही यहां नूतन पाषाण युग की सभ्यता का विकास किया। इस संस्कृति ने ही प्रागैतिहासिक युग से भारतीय संस्कृति को चेतना दी है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।